

महाराष्ट्र एमएलसी चुनाव को लेकर नितिन गडकरी का बड़ा दावा, कहा- पांच सीटों पर हम चुनाव जीतेंगे

मुंबई, 23 अक्टूबर। महाराष्ट्र में हो रहे एमएलसी चुनाव में केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने मतदान किया। इस दौरान उन्होंने पत्रकारों से बातचीत करते हुए कहा कि इस चुनाव में बीजेपी और जनसंघ को हमेशा जीत मिली है। इस बार भी हमारे उम्मीदवार विजयी होंगे। उन्होंने आगे कहा कि हमारी जीत निश्चित होगी और पहले राउंड में ही हम जीत हासिल कर लेंगे।

नागरिक उड्डयन राज्य मंत्री मुरलीधर मोहोले ने एमएलसी चुनाव को लेकर कहा कि मतदान करके हमने मताधिकार का प्रयोग किया है। पूरे महाराष्ट्र में पांच जगहों पर चुनाव हो रहे हैं। हम आखिरी मतदाता तक पहुंचने में कामयाब हुए हैं। पीएम

मोदी और सीएम देवेंद्र फडणवीस के नेतृत्व में जनता का हमेशा समर्थन मिला है। मुझे विश्वास है कि इन पांच जगहों पर हम चुनाव जीतेंगे। महाराष्ट्र में तेजी से विकास हो रहा है, इसे लोग देख रहे हैं। हम पांचों जगहों पर चुनाव जीतेंगे।

महाराष्ट्र सरकार में मंत्री चंद्रकांत पाटील ने कोल्हापुर में गुलाब देकर मतदाताओं का स्वागत किया और एमएलसी चुनावों में बीजेपी की जीत को लेकर भरोसा जताया। इस दौरान उन्होंने पत्रकारों से बातचीत करते हुए कहा कि तीन सप्ताह तक बड़े पैमाने पर प्रचार के बाद आज सुबह 8 बजे से मतदान शुरू हुआ है। मैं पुणे में मतदान करूंगा और



समय मिला तो आठों विधानसभा क्षेत्रों में जाऊंगा। मुझे विश्वास है कि भाजपा उम्मीदवारों को भारी मतों से जीत मिलेगी। इस बार शाम 5 बजे से

सबकुल स्पष्ट हो जाएगा। अमरावती निर्वाचन क्षेत्र से एमएलसी और शिवसेना उम्मीदवार किरण सरनाइक कहते हैं कि मैं

वाशिम निर्वाचन क्षेत्र के दौरे पर था और मैंने देखा कि यहां मतदान केंद्रों पर बड़ी संख्या में मतदाता पहुंच रहे हैं। वे पूरे उत्साह के साथ वोट डाल रहे हैं और मुझे पूरा भरोसा है कि 27 अक्टूबर को जब मतपत्र खोले जाएंगे तो मैं शिक्षकों का प्रतिनिधित्व करने वाले महायुति उम्मीदवार के तौर पर चुना जाऊंगा। एमएलसी चुनावों को लेकर पुणे ग्रेजुएट्स निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव लड़ रही महा विकास अघाड़ी की उम्मीदवार हर्षदा देशमुख ने कहा कि हमने बहुत अच्छी तैयारी की है, और आज, मतदान के दिन, हमें पूरा भरोसा है कि सभी मतदाता हमारे साथ खड़े होंगे।

ओम प्रकाश माथुर बने केरल के 29वें राज्यपाल, लोक भवन में ली पद की शपथ

केरल, 23 अक्टूबर लोक भवन में ओम प्रकाश माथुर ने केरल के 29वें राज्यपाल के रूप में शपथ ली। यह शपथ ग्रहण समारोह तिरुवनंतपुरम के लोक भवन ऑडिटोरियम में आयोजित किया गया था। केरल उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश, जस्टिस सोमन सेन ने माथुर को पद की शपथ दिलाई। माथुर इससे पहले सिक्किम के राज्यपाल के रूप में भी काम कर चुके हैं। अठकसे बातचीत में, राज्य के नेताओं और भारतीय जनता पार्टी के नेताओं ने उनकी नियुक्ति का स्वागत किया और इसे गर्व का अवसर बताया। केरल के मंत्री और राज्य कांग्रेस प्रमुख सनी जोसेफ ने इस समारोह को एक खुशी का मौका बताया। उन्होंने मुख्यमंत्री, मुख्य न्यायाधीश, मंत्रियों और विधायकों को मौजूदगी का जिक्र करते हुए कहा शपथ ग्रहण समारोह बहुत ही सुखद माहौल में संपन्न हुआ। इसमें



मुख्यमंत्री और मुख्य न्यायाधीश समेत कई लोग शामिल हुए। लगभग सभी मंत्री और हमारे विधायक वहां मौजूद थे। जोसेफ ने बताया ईश्वर का अपना देश कहे जाने वाले केरल जैसे खूबसूरत राज्य में नए राज्यपाल का स्वागत करना एक बहुत ही खुशी का मौका था। हमने नए राज्यपाल का पूरे दिल से और गर्मजोशी के साथ स्वागत किया है। हमें इस समारोह में शामिल होकर खुशी हुई है। राजस्थान के मंत्री संजय शर्मा ने माथुर की नियुक्ति को राजस्थान के लिए गर्व का क्षण बताया। उन्होंने भाजपा के साथ माथुर के लंबे जुड़ाव

और उनके संगठनात्मक दायित्वों को याद करते हुए कहा यह हमारे लिए बहुत गर्व की बात है। राजस्थान में भाजपा के वरिष्ठ नेता और संघ के प्रचारक ओम प्रकाश माथुर ने कई पदों पर काम किया है, जिनमें भाजपा के राजस्थान प्रदेश अध्यक्ष और संगठनात्मक सचिव के रूप में उनकी भूमिकाएं शामिल हैं। उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर पार्टी में कई जिम्मेदारियां निभाई हैं, दो बार राज्यसभा सदस्य रहे हैं और कई राज्यों में पार्टी के प्रभारी के तौर पर चुनाव प्रबंधन का काम भी संभाला है। उन्होंने कहा हाल ही में सिक्किम के राज्यपाल के रूप में अपना कार्यकाल पूरा करने के बाद, आज उन्होंने केरल के राज्यपाल के तौर पर शपथ ली है। यह राजस्थान के सभी लोगों के लिए, और विशेष रूप से भाजपा के जमीनी स्तर के कार्यकर्ताओं के लिए गर्व का क्षण है।

जासूसी के आरोप में ऑस्ट्रिया ने 4 रूसी राजनयिकों को देश से निकाला, रूस ने दी कड़ी चेतावनी

वियना, 23 अक्टूबर। ऑस्ट्रिया ने शुक्रवार को चार रूसी राजनयिकों पर जासूसी का आरोप लगाते हुए उन्हें देश छोड़ने का आदेश दिया। ऑस्ट्रिया को लंबे समय से जासूसी का गढ़ माना जाता रहा है।

इसका कारण यहां के नरम जासूसी कानून और बड़ी संख्या में राजनयिकों की मौजूदगी है, क्योंकि इस शहर में कई अंतरराष्ट्रीय संगठन स्थित हैं।

एक ऑस्ट्रियाई अधिकारी ने बताया कि इन राजनयिकों को जासूसी के आरोपों के चलते निकाला जा रहा है और उन्हें आने वाले कुछ दिनों में देश छोड़ने के लिए कहा गया है। ऑस्ट्रिया के विदेश मंत्रालय ने बताया कि निकाले गए चार लोगों में से तीन वियना स्थित रूसी दूतावास के राजनयिक थे,



जबकि चौथा व्यक्ति ऑगोर्नाइजेशन फार सिक्योरिटी एंड कोऑपरेशन इन यूरोप में रूस के मिशन से जुड़ा था। मंत्रालय ने कहा कि रूसी राजनयिकों ने ऐसी गतिविधियों में हिस्सा लिया जो उनके राजनयिक दर्जे के अनुकूल नहीं थीं, इसलिए उन्हें अवांछित व्यक्ति घोषित कर दिया गया है।

मंत्रालय ने इन राजनयिकों या उनकी कथित गतिविधियों के बारे में कोई और जानकारी नहीं दी। रूसी उप विदेश मंत्री दिमित्री ल्युबिंस्की ने कहा कि इस पर प्रतिक्रिया तय है। इस कदम के बाद, 2020 से अब तक ऑस्ट्रिया से निकाले गए रूसी राजनयिकों की कुल संख्या 18 हो गई है।

पंचकूला, 23 अक्टूबर। हरियाणा में बिजली वितरण के निजीकरण के खिलाफ दो दिन से चल रही बिजली कर्मचारियों की हड़ताल शुक्रवार शाम को खत्म हो गई।

गुरुग्राम और नूंह में निजी कंपनी को बिजली वितरण का लाइसेंस देने के फैसले के विरोध में शुरू हुए आंदोलन को खत्म कराने के लिए मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी और बिजली मंत्री अनिल विज ने कर्मचारी नेताओं के साथ दो दौर की बैठक की। निजी कंपनी का लाइसेंस रद्द कराने के लिए बिजली अधिनियम की धारा 108 के तहत कार्रवाई के आश्वासन के बाद कर्मचारी संगठनों ने हड़ताल वापस लेने की घोषणा कर दी। हालांकि,



लाइसेंस रद्द करने की औपचारिक प्रक्रिया अभी पूरी होनी है। अब तीन नवंबर को सरकार और कर्मचारी संगठनों के बीच दोबारा बैठक होगी।

ऑल हरियाणा पावर वर्कर यूनियन के नेता देवेन्द्र हड्डा ने कहा कि मुख्यमंत्री और बिजली मंत्री के साथ बैठक में कर्मचारियों की मांगों पर

विस्तार से चर्चा हुई। सरकार ने निजी कंपनी को बिजली वितरण के क्षेत्र में प्रवेश से रोकने के लिए कार्रवाई का आश्वासन दिया है। यूनियन सभी मांगों पर बातचीत के बाद हड़ताल वापस लेने का फैसला करती है। उन्होंने कहा कि सभी 95 प्रतिशत हड़ताली कर्मचारी तुरंत काम पर लौट आएंगे और जहां भी बिजली आपूर्ति में फाल्ट है, उन्हें जल्द दूर

किया जाएगा। हड़ताल खत्म कराने के लिए शुक्रवार को दो दौर की बातचीत हुई। पहले दौर की बैठक में बिजली मंत्री अनिल विज ने कर्मचारी नेताओं को आश्वासन दिया कि निजी कंपनी को बिजली वितरण का लाइसेंस देने के फैसले के खिलाफ बिजली अधिनियम की धारा 108 के तहत कार्रवाई की जाएगी।

इस बार सर्दी में भी छूटेंगे पसीने, प्रशांत महासागर में हो रही हलचल; चरम पर पहुंचेगा अल नीनो

नई दिल्ली, 23 अक्टूबर। दिसंबर में अल नीनो अपने चरम पर पहुंच सकता है, जिसके प्रभाव से नवंबर से जनवरी के बीच भारत में सामान्य से कम सर्दी पड़ने की संभावना है। हालांकि उत्तरी हिस्से में टंड की तीव्रता पश्चिमी विक्षोभ,



पहाड़ों पर बर्फबारी और उत्तर-

पश्चिमी हवाओं पर निर्भर करती है। इस दौरान दिल्ली समेत पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, राजस्थान एवं बिहार में कभी-कभी शीतलहर की

आशंका को खारिज नहीं किया जा सकता। मैदानों में तापमान कुछ समय के लिए गिर सकता है। फिर भी मौसम विज्ञानियों का मानना है कि इस बार लंबे समय तक कड़ाके की ठंड पड़ने की आशंका काफी कमजोर है।

मद्रास हाई कोर्ट का फैसला, तमिल की मांग पर आपराधिक केस चलाना कानून का दुरुपयोग तमिलनाडु। मद्रास हाई कोर्ट ने फरवरी 2024 में थेनी में विरोध प्रदर्शन करने वाले लोगों के एक समूह के खिलाफ ट्रायल कोर्ट में चल रही आपराधिक कार्यवाही को रद्द कर दिया है। इन लोगों ने मांग की थी कि तमिल को हाई कोर्ट की आधिकारिक भाषा बनाया जाए। जस्टिस आर. विजयकुमार ने एस. विनोद राजा की याचिका को स्वीकार करते हुए यह आदेश दिया। विनोद राजा ने थेनी ज्यूडिशियल मजिस्ट्रेट कोर्ट में अपने और अन्य लोगों के खिलाफ चल रही आपराधिक कार्यवाही को रद्द करने की मांग की थी। अभियोजन पक्ष के अनुसार, 11 फरवरी 2024 को याचिकाकर्ता और अन्य लोग थेनी जिले में गैर-कानूनी तरीके से इकट्ठा हुए थे और उन्होंने एक फ्लेक्स बैनर लगाया था, जिसमें हाई कोर्ट की आधिकारिक भाषा के रूप में तमिल को शामिल करने की मांग की गई थी।

उन पर पुलिसकर्मियों को धमकाने, उनके काम में बाधा डालने और विरोध प्रदर्शन की अनुमति न मिलने पर वाहनों में आग लगाने की धमकी देने का भी आरोप था। इस शिकायत के आधार पर, थेनी पुलिस ने उनके खिलाफ मामला दर्ज किया था। याचिकाकर्ता के वकील ने कहा कि विरोध-प्रदर्शन लोकतांत्रिक था और उन्होंने तर्क दिया कि याचिकाकर्ता और अन्य लोगों के खिलाफ एक झूठी शिकायत दर्ज की गई थी।



DAKS REHAB CENTRE

(PARALYSIS PHYSIOTHERAPY CENTER AND OLD AGE HOME)

Contact us: 9820519851

विल्डिंग नंबर 3, प्लॉट नंबर 3, आदर्श घरकुल सोसायटी सायन कोलीवाडा जीटीवी नगर मुंबई-37

- * Stroke/Paralysis/Complete Rehab Centre
- * बाहर से आये रोगी और उनके परिजनों के ठहरने कि व्यवस्था
- * वृद्ध लोगों के लिए रहने की सुविधा उपलब्ध
- * DM/HT/THYROID इन सब से कैसे बचें
- * NGO में मिलनेवाली सहायता को लोगों में देना
- * चिकित्सा उपकरणों को किराये और बिक्री सुविधा उपलब्ध
- * एम्बुलेंस सेवा उपलब्ध
- * पोस्ट ऑपरेटिव रिहैब सेंटर
- * मरीजों के लिए घर पर 12 और 24 घंटे जीडीए परिचारक
- * विशेषज्ञ डॉक्टरों से ऑनलाइन और ऑफलाइन परामर्श की सुविधा उपलब्ध
- * मासिक ईएमआई के आधार पर व्यक्तियों, परिवारों और माता-पिता के लिए स्वास्थ्य निती की चिकित्सा सुविधा उपलब्ध







दिनांक : 21 अक्टूबर 2026 से 29 अक्टूबर 2026

स्थान - बी. आर.पी. इंटर कॉलेज मैदान, जौनपुर

कथा समय - अपराह्न 3 बजे से सांय 6 बजे तक

भव्य कलश यात्रा एवं झांकी

दिनांक : 20 अक्टूबर 2026, सुबह 09:00 बजे से

हनुमान घाट से केरारवीर मंदिर
चहारसू चौराहा ओलन्दगंज,
पॉलिटेक्निक चौराहा,
वाजिदपुर तिराहा,
बी.आर.पी. इण्टर
कॉलेज, मैदान

कथा व्यास : परम्पूज्य
आचार्य शान्तनु जी
महाराज

आप सभी
रामचरणानुगामी भक्तजन
सादर आमंत्रित हैं।

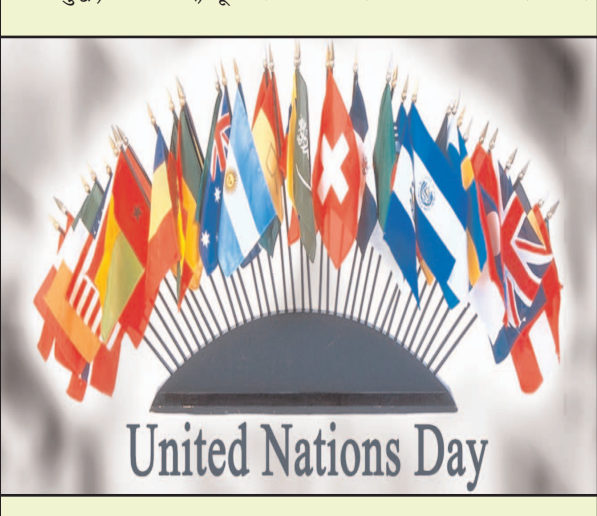
मुख्य आयोजक
ज्ञान प्रकाश सिंह

संयुक्त राष्ट्र दिवस (24 अक्टूबर 2026) पर विशेष संयुक्त राष्ट्र की साख पर सवाल, सुधार से ही बचेगी प्रतिष्ठा



-ललित गार्ग

संयुक्त राष्ट्र दिवस केवल एक अंतरराष्ट्रीय संगठन की स्थापना का उत्सव नहीं, बल्कि विश्व शांति, मानवाधिकारों, न्याय, समानता और राष्ट्रों के बीच सहयोग के उ न संकल्पों को याद करने का अवसर है, जिनके आधार पर द्वितीय विश्व युद्ध की विभीषिका के बाद इस संगठन की स्थापना हुई थी। 24 अक्टूबर, 1945 को संयुक्त राष्ट्र चार्टर लागू होने के साथ दुनिया ने एक ऐसी व्यवस्था की



जुड़ा रही है, तब संयुक्त राष्ट्र की भूमिका, निष्पक्षता और प्रभावशीलता पर गंभीर प्रश्न उठ रहे हैं। जिस संगठन से विश्व समुदाय को न्याय की अपेक्षा थी, उसकी कार्यप्रणाली ही संदेह के घेरे में आने लगे तो आत्ममंथन अनिवार्य हो जाता है। संयुक्त राष्ट्र की उपलब्धियों को नकारना उचित नहीं होगा। उसने अंतरराष्ट्रीय संवाद के लिए एक साझा मंच उपलब्ध कराया, मानवाधिकारों की सार्वभौम घोषणा के माध्यम से मानवीय गरिमा के वैश्विक मानक स्थापित किए और अनेक देशों में शांतिरक्षा अभियानों के जरिए स्थिरता बहाल करने का प्रयास किया। विश्व स्वास्थ्य, बाल कल्याण, शिक्षा, शरणार्थियों की सहायता तथा सतत विकास के क्षेत्रों में उसकी विभिन्न संस्थाओं ने उल्लेखनीय योगदान दिया है। इसके बावजूद मूल प्रश्न यह है कि क्या संयुक्त रााष्ट्र अपने सबसे महत्वपूर्ण दायित्व-युद्ध रोकने, आतंकवाद पर प्रभावी अंकुश लगाने और सभी राष्ट्रों के साथ समान व्यवहार करने में अपेक्षित सफलता प्राप्त कर पाया है? आज का अनुभव इस प्रश्न का संतोषजनक उत्तर नहीं देता।

संयुक्त राष्ट्र की सबसे बड़ी कमजोरी उसकी सुरक्षा परिषद की संरचना में दिखाई देती है। अमेरिका, रूस, चीन, फ्रांस और ब्रिटेन को प्राप्त वीटो अधिकार कई बार वैश्विक शांति से अधिक उनके राष्ट्रीय हितों की रक्षा का माध्यम बन जाता है। जब किसी युद्ध या मानवीय त्रासदी पर प्रभावी निर्णय भू-राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता के कारण रुक जाता है, तब संयुक्त राष्ट्र की घोषणाएं और अपीलें अपनी नैतिक शक्ति खोने लगती हैं। गाजा, यूक्रेन और सीरिया जैसे संघर्षों ने यह प्रश्न तीखा किया है कि क्या विश्व शांति का दायित्व निभाने वाला संगठन वास्तव में निर्णायक भूमिका निभाने में सक्षम है? विडंबना यह है कि दुनिया बदल गई, लेकिन संयुक्त राष्ट्र की निर्णय व्यवस्था काफी हद तक उसी पुराने शक्ति-संतुलन में बंधी हुई है। संयुक्त राष्ट्र की विश्वसनीयता पर उठते प्रश्नों का ताजा उदाहरण दाऊद इब्राहिम और उसके गिरोह डी-कंपनी से जुड़ा विवाद है। आतंकवाद और मानवाधिकारों पर संयुक्त राष्ट्र के विशेष प्रतिवेदक बेन साल की रिपोर्ट में डी-कंपनी को ह्ाभारत आधारितह्ा अपराधिक गिरोह बताया गया। भारत ने 21 अक्टूबर 2026 को संयुक्त राष्ट्र महासभा की तीसरी समिति में इस विवरण पर कड़ी आपत्ति जताते हुए इसे तथ्यात्मक रूप से गलत और संगठन की साख को नुकसान पहुंचाने वाला बताया। भारतीय प्रतिनिधि रघु पुरी ने दाऊद के आतंकवादी गतिविधियों से जुड़े इतिहास और संयुक्त राष्ट्र की प्रतिबंध सूची में दर्ज तथ्यों का उल्लेख करते हुए कहा कि दाऊद भारत में वांछित अपराधी है और भारत के अनुसार पाकिस्तान में रह रहा है।

यह प्रकरण इसलिए गंभीर है कि आतंकवाद जैसे संवेदनशील विषय पर तथ्यात्मक शुद्धता और निष्पक्षता सर्वोपरि होनी चाहिए। किसी आतंकवादी गिरोह की भौगोलिक पहचान को लेकर गलत या अधूरी जानकारी सामने आना केवल एक रिपोर्ट की त्रुटि नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद विरोधी प्रयासों की विश्वसनीयता का प्रश्न है। हालांकि किसी एक रिपोर्ट की गलती से पूरे संगठन के प्रत्येक कार्य को खारिज नहीं किया जा सकता, लेकिन ऐसी त्रुटियों की जांच, सुधार और जवाबदेही सुनिश्चित करना आवश्यक है। विश्व प्रतिवेदकों की स्वतंत्रता महत्वपूर्ण है, किंतु स्वतंत्रता का अर्थ तथ्यों और उत्तरदायित्व से मुक्त होना नहीं है। इसी प्रकार मानवाधिकारों के मामलों में भी संयुक्त राष्ट्र को संतुलित दृष्टिकोण अपनाना होगा। मानवाधिकार किसी राष्ट्र की सीमाओं में कैद विषय नहीं हैं, लेकिन उनकी रक्षा के नाम पर किसी देश के विरुद्ध निष्कर्ष निकालने से पहले प्रमाणों, परिस्थितियों और आतंकवाद से प्रभावित नागरिकों के अधिकारों को समान गंभीरता से देखना चाहिए। आतंकवाद के पीड़ितों के मानवाधिकार भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं, जितने आतंकवाद से निपटने के दौरान किसी निंदेर्ष व्यक्ति के अधिकार। यदि आतंकवाद के प्रायोजकों, हिंसा के जिम्मेदार लोगों और पीड़ितों के प्रति दृष्टिकोण में असमानता दिखाई देती है, तो निष्पक्षता पर संदेह स्वाभाविक है।

संयुक्त राष्ट्र के सामने एक दूसरी बड़ी चुनौती प्रतिनिधित्व की असमानता है। भारत, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका जैसे क्षेत्रों की बढ़ती वैश्विक भूमिका के बावजूद सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता और वीटो व्यवस्था में व्यापक सुधार नहीं हो पाया है। दुनिया की वर्तमान राजनीतिक, आर्थिक और जनसांख्यिकीय वास्तविकताओं को प्रतिबिंबित करने वाली व्यवस्था के बिना संयुक्त राष्ट्र को अधिक लोकतांत्रिक और प्रतिनिधिक बनाना कठिन है। आतंकवाद के विरुद्ध साझा रणनीति, युद्धविराम की प्रभावी व्यवस्था, मानवीय सहायता की निर्बाध उपलब्धता और अंतरराष्ट्रीय कानून के समान अनुपालन को भी प्राथमिकता देनी होगी। संयुक्त राष्ट्र दिवस पर आत्ममंथन का वास्तविक अर्थ केवल उसकी उपलब्धियों का गुणगान करना नहीं, बल्कि उसकी कमियों को स्वीकार कर सुधार का संकल्प लेना है। संगठन को अपने निर्णयों में पारदर्शिता, रिपोर्टों में तथ्यात्मक शुद्धता, अधिकारियों की जवाबदेही और सभी देशों के प्रति निष्पक्षता सुनिश्चित करनी होगी। वीटो अधिकार के दुरुपयोग पर अंकुश लगाने, सुरक्षा परिषद के विस्तार और आतंकवाद के विरुद्ध दोहरे मानदंड समाप्त करने की दिशा में ठोस पहल करनी होगी।

आज जब दुनिया युद्ध, आतंकवाद, हिंसा, मानवीय संकट और राष्ट्रों के बीच बढ़ते अविश्वास के दौर से गुजर रही है, तब संयुक्त राष्ट्र दिवस की प्रासंगिकता और जिम्मेदारी पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है। यह दिवस केवल एक अंतरराष्ट्रीय संगठन की स्थापना का स्मरण नहीं, बल्कि विश्व शांति, सह-अस्तित्व, मानवीय गरिमा और वैश्विक सहयोग के संकल्प को दोहराने का अवसर है। संयुक्त राष्ट्र को अपनी निष्पक्षता, विश्वसनीयता और प्रभावशीलता के माध्यम से यह सिद्ध करना होगा कि वह शक्तिशाली राष्ट्रों के हितों का नहीं, बल्कि समूची मानवता के न्याय और सुरक्षा का प्रहरी है। उसका वास्तविक दायित्व युद्ध रोकना, आतंकवाद पर अंकुश लगाना और शांति का मार्ग प्रशस्त करना है। संयुक्त राष्ट्र का उद्देश्य दुनिया पर शासन करना नहीं, बल्कि दुनिया को युद्ध, अन्याय और विनाश से बचाने में सहयोग देना है। उसकी प्रतिष्ठा केवल उसके घोषणापत्रों से नहीं, बल्कि संकट की घड़ी में किए गए निष्पक्ष और प्रभावी कार्यों से तय होगी। 24 अक्टूबर का संदेश तभी सार्थक होगा, जब यह संगठन सुनिश्चित करने की ओर लौटे और शक्तिशाली तथा कमजोर, छोटे तथा बड़े, सभी राष्ट्रों के लिए समान न्याय का भरोसेमंद मंच बने। संयुक्त राष्ट्र को केवल अस्तित्व नहीं, अपनी प्रासंगिकता भी बचानी है और इसके लिए पक्षपात से मुक्ति, जवाबदेही तथा आमूलचूल सुधार अब विवकल्प नहीं, अनिवार्यता हैं

सपा की सियासत में आजम की ताकत और रामपुर जेल का सियासी फलसफा



अशोक भाटिया

उत्तर प्रदेश की राजनीति में रामपुर की जेल सिर्फ एक चारदीवारी नहीं, बल्कि वर्तमान में समाजवादी पार्टी के भविष्य और मुस्लिम सियासत के नए ध्रुवीकरण का केंद्र बन चुकी है। २२ अक्टूबर २०२६ को सपा प्रमुख अखिलेश यादव और पार्टी के सबसे कड़ावर मुस्लिम चेहरे आजम खान के बीच रामपुर जिला जेल में हुई लगभग एक घंटे की मुलाकात केवल दो नेताओं की शिष्टाचार भेंट नहीं थी। यह उत्तर प्रदेश के आगामी २०२७ के विधानसभा चुनाव की बिसात पर चली गई एक ऐसी चाल है, जिसके दूरगामी परिणाम न केवल समाजवादी पार्टी के भीतर, बल्कि पूरे राज्य के सामाजिक-राजनीतिक ताने-बाने पर दिखाई देंगे। कानूनी शिकंजे में फंसे और चुनावी राजनीति से तकनीकी रूप से दूर हो चुके आजम खान की ताकत का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि उनके एक इम्प्राे पर पश्चिमी उत्तर प्रदेश की दर्जनों सीटों का गणित बदल सकता है। यही कारण है कि अखिलेश यादव को खुद रामपुर जेल पहुंचकर यह संदेश देना पड़ा कि समाजवादी पार्टी में आजम खान की हैसियत न तो कम हुई है और न ही उन्हें हाथिएर धकेला जा सकता है। यह मुलाकात इस बात का जीवंत प्रमाण है कि सत्ता और कानूनी मुकदमों के उतार-चढ़ाव के बावजूद, सपा की सियासत में आजम की ताकत का

सूज पूरी तरह अस्त नहीं हुआ है, बल्कि रामपुर जेल की सलाखों के पीछे से वह एक नई ऊर्जा के साथ उभर रहा है। यह घटनाक्रम यह भी दर्शाता है कि जब-जब उत्तर प्रदेश में सत्ता परिवर्तन या बड़े राजनैतिक उलटफेर की नींव रखी जाती है, तब-तब रामपुर का किला और वहां का नेतृत्व स्वतः ही मुख्यधारा की चर्चा के केंद्र में आ जाता है।

इस पूरे घटनाक्रम को समझने के लिए समाजवादी पार्टी के अंतर्विरोधों और उत्तर प्रदेश के बदलते मुस्लिम नेतृत्व के संकट को धरातल जरूरी है। पिछले कुछ समय से यह चर्चा आम थी कि आजम खान के जेल जाने और उनके परिवार पर आए कानूनी संकट के दौरान समाजवादी पार्टी ने उस आक्रामकता के साथ उनका साथ नहीं दिया, जिसकी उम्मीद एक संस्थापक सदस्य को होती है। पार्टी के भीतर और बाहर इस बात को लेकर सुगबुहाहट थी कि अखिलेश यादव अपनी छवि को एक नए, आधुनिक और गैर-विवादस्पद रूप में ढालने के लिए 'माई' (मुस्लिम-यादव) समीकरण से थोड़ा इतर 'पीडीए' (पिछड़ा, दलित, अल्पसंख्यक) का नारा दे रहे हैं। इस नए विमर्श में आजम खान जैसे पुराने समाजवादी दिग्गजों की कट्टर छवि फिट नहीं बैठ रही थी। इसी बीच, अससुद्धीन ओवैसी की एआईएमआईएम और अन्य क्षेत्रीय दलों ने इस खलीपन को भरने की कोशिश शुरू कर दी। ओवैसी लगातार यह आरोप लगाते रहे कि सपा मुस्लिमों के वोट तो लेती है, लेकिन जब उनके बड़े नेतृओं पर संकट आता है, तो नेतृत्व चुप्पी साध लेता है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश, जो कभी आजम खान का अभेद्य किला माना जाता था, वहां मुस्लिम मतदाताओं के बीच उपजे इस असमंजस को अखिलेश यादव थांप चुके थे। रामपुर लोकसभा उपचुनाव और उसके बाद के घटनाक्रमों में जिस तरह से अंदरूनी गुटबाजी



सामने आई, उसने पार्टी आलाकमान को सचेत कर दिया कि आजम खान

**हिन्दी दैनिक
उत्तरशक्ति
मार्गदर्शन**

को नजरअंदाज करने की कीमत २०२७ में बेहद भारी पड़ सकती है। इसलिए, अखिलेश यादव का रामपुर जेल जाना राजनीतिक मजबूरी थी था और एक सोची-समझी रणनीति थी, जिसके जरिए उन्होंने एक ही झटके में ओवैसी के नैरेटिव को ध्वस्त करने और अपने कोर वोटर को यह भरोसा दिलाने का प्रयास किया कि 'नेताजी' (मुलायम सिंह यादव) के दौर के स्तंभ आज भी उतने ही आदरणीय हैं। यह कदम यह भी स्पष्ट करता है कि सपा अपने पारंपरिक और वफादार वोट बैंक को किसी भी अन्य वैचारिक प्रयोग की वेदी पर होम करने के लिए तैयार नहीं है। जेल की इस मुलाकात ने न केवल सपा के कार्यकर्ताओं में नया जोश भरा है, बल्कि पार्टी के भीतर चल रही अंदरूनी खींचतान पर भी एक भावनात्मक अपील राज की है, जिसे कोई दूसरा नेता रिप्लेस नहीं कर पाया है। यह प्रभाव केवल रामपुर तक सीमित नहीं है, बल्कि मुरादाबाद, बिजनौर, बरेली और अमोहा जैसे पूरे मुस्लिम बहुल बेल्ट में आजम खान

बंटा नजर आ रहा था। अखिलेश यादव ने जेल से बाहर आकर जिस तरह रआजम थे, आजम हैं और आजम रहेंगेर का हुंकार भरा, उससे उन्होंने यह साफ कर दिया कि रामपुर और पूरे रूहेलखंड क्षेत्र में समाजवादी पार्टी का चेहरा और कमान आज भी परोक्ष रूप से आजम खान के पास ही रहेगा। खबरों के मुताबिक, इस मुलाकात के दौरान आजम खान की पत्नी तंजीन फातिमा ने अखिलेश यादव को संभावित उम्मीदवारों और रणनीतिक बदलावों की एक सूची भी सौंपी। यह इस बात का स्पष्ट संकेत है कि २०२७ के विधानसभा चुनावों में टिकटों के बंटवारे से लेकर गठबंधन के स्वरूप तक, आजम खान की राय को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाएगी। भले ही आजम खान खुद चुनावी मैदान में न उतर सकें, लेकिन उनका 'रिमोट कंट्रोल' यूपी की सियासत में बेहद प्रभावी रहने वाला है। उनका यह प्रभाव अखिलेश यादव को उनके पास खींच लाया, क्योंकि वे जानते हैं कि पश्चिमी उत्तर प्रदेश के मुस्लिम समाज में आजम खान की आवाज आज भी एक भावनात्मक अपील रखती है, जिसे कोई दूसरा नेता रिप्लेस नहीं कर पाया है। यह प्रभाव केवल रामपुर तक सीमित नहीं है, बल्कि मुरादाबाद, बिजनौर, बरेली और अमोहा जैसे पूरे मुस्लिम बहुल बेल्ट में आजम खान

की राजनीतिक छत्रछाया आज भी टिकटार्थियों के भाग्य का फैसला करने की क्षमता रखती है। दूसरी तरफ, इस मुलाकात ने विपक्षी खेमे, विशेषकर भारतीय जनता पार्टी को एक बार फिर सपा पर हमलावर होने का मौका दे दिया है। भाजपा ने इसे रटुधिकरण की राजनीति का नया अध्यायर और रअपराधियों की संरक्षण देने की कोशिशर करार दिया है। सत्ताधारी दल का तर्क है कि कानून सम्मत कार्रवाई के तहत जेल में बंद एक सजायापता नेता से राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री की यह मुलाकात यह दर्शाती है कि सपा आज भी अपने बाहर नहीं निकल पाई है। भाजपा के रणनीतिकार इस मुलाकात को बहुसंख्यक मतदाताओं के बीच भुनाने की कोशिश करंगे, ताकि सपा के खिलाफ एक बार फिर ध्रुवीकरण का माहौल बनाया जा सके। भाजपा के लिए यह मुलाकात एक ऐसा हथियार है जिसके जरिए वे यह साबित करने की कोशिश करंगे कि अखिलेश यादव का 'पीडीए' सिर्फ एक मुखौटा है, और असलियत में वे उसी पुरानी राजनीति की ओर लौट रहे हैं जिसे जनता ने नकारा था। सुभासपा और अन्य छोटे दलों ने भी इसे केवल एक 'चुनावी नौटंकी' बताया है। विश्व का यह तीखा हमला दिखाता है कि वे भी अच्छी तरह जानते हैं कि आजम और अखिलेश का यह पुनर्मिलन अगर जमीन पर रंग लाया, तो विपक्षी दलों के लिए मुस्लिम वोटों में संघ लगाना नामुमकिन हो जाएगा। भाजपा की ओर से आने वाले तीखे बयान इस बात का भी संकेत हैं कि वे आने वाले समय में कानून-व्यवस्था के मुद्दे को एक बार फिर चुनाव के केंद्र में लाएंगे और आजम खान का नाम लेकर सपा को घेरने की हरसंभव कोशिश करंगे। इस पूरे परिदृश्य में सबसे महत्वपूर्ण सवाल यह उठता है कि क्या रामपुर जेल की उड़ता

मुलाकात समाजवादी पार्टी को २०२७ की सत्ता के सिंहासन तक पहुंचा पाएगी? उत्तर प्रदेश की सियासत अब २०१२ या २०१७ जैसी नहीं रह गई है। मतदाता बेहद जागरूक हैं और केवल भावनात्मक अपीलों पर वोट नहीं करते। आजम खान की ताकत का एक पहलू अगर उनका भारी जनसमर्थन है, तो दूसरा पहलू उनकी छवि को लेकर होने वाला काउंटर-ध्रुवीकरण भी है। अखिलेश यादव के सामने चुनौती यह होगी कि वे आजम खान की ताकत का इस्तेमाल मुस्लिम वोटों को एकजुट करने में तो करें, लेकिन इसके साथ ही बहुसंख्यक और गैर-यादव ओबीसी मतदाताओं को छिटकने न दें। पीडीए का जो गुलदस्ता अखिलेश ने तैयार किया है, उसमें आजम खान की हिस्सेदारी को इस तरह पिरोना होगा कि वह समावेशी दिखे, न कि केवल एक वर्ग विशेष की राजनीति। पश्चिमी उत्तर प्रदेश का जो जाट-मुस्लिम-दलित गठबंधन सपा बनाने का प्रयास कर रही है, उसमें आजम खान की स्वीकार्यता को संतुलित रखना एक बेहद बारीक राजनीतिक कला होगी। यदि सपा इस संतुलन को साधने में सफल रही, तो रामपुर जेल से शुरू हुआ यह सफर २०२७ में लखनऊ के सचिवालय तक पहुंच सकता है, अन्याथा ध्रुवीकरण की तेज हवा इस पूरी रणनीति को बिखेर भी सकती है। बहरहाल, रामपुर जेल के बंद कमरों से निकला यह सियासी संदेश उत्तर प्रदेश की वादियों में गुंजने लगा है। इसने यह तय कर दिया है कि आने वाले दिनों में रामपुर की धरती एक बार फिर सुबे की राजनीति का कुरुक्षेत्र बनेगी। आजम खान जेल की सलाखों के पीछे रहकर भी सपा की सियासत के सबसे बड़े खिलाड़ियों में से एक बने हुए हैं, और अखिलेश यादव के इस कदम ने यह साबित कर दिया है कि उत्तर प्रदेश की सत्ता का रास्ता आज भी रामपुर के सियासी गलियारों से होकर ही गुजरता है।

आस्था और प्रगति की नई पहचान, विश्व में सामाजिक बढ़ रहा सम्मान

भारत केवल भौगोलिक सीमाओं में बसा एक देश नहीं, बल्कि हजारों वर्षों की सभ्यता, संस्कृति, आध्यात्मिक चेतना, मानवीय मूल्यों और सामाजिक समरसता की अद्भुत विरासत का नाम है। इस देश की आत्मा में आस्था का प्रकाश है, विचारों में विविधता का सम्मान है और भविष्य की कल्पना में प्रगति का संकल्प है। आज जब विश्व तेजी से बदल रहा है, तब भारत की पहचान भी एक नए स्वरूप में उभर रही है। एक ओर सनातन परंपराओं और धार्मिक आस्थाओं और सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति जन्मानस का जुड़ाव दिखाई देता है, तो दूसरी ओर विज्ञान, तकनीक, शिक्षा, अंतरिक्ष, उद्योग और डिजिटल विकास के क्षेत्रों में आगे बढ़ने की आकांक्षा भी मजबूत हो रही है। यही वह संघर्ष है, जो भारत को विश्व के सामने एक विशिष्ट पहचान प्रदान करता है। प्रश्न यह है कि क्या आस्था और आधुनिक प्रगति एक-दूसरे के विरोधी हैं? क्या परंपराओं को सुरक्षित रखते हुए आधुनिकता को अपनाना नहीं जा सकता? निरसंदिह, भारत की सांस्कृतिक चेतना और विकास की यात्रा का सार इसी संतुलन में निहित है।

आस्था हमारी जड़ें, प्रगति हमारी उड़ान: भारत की पहचान उसकी प्राचीन सभ्यता, ऋषि-मुनियों की ज्ञान-परंपरा, उपनिषदों के चिंतन, भगवान श्रीराम के आदर्शों, भगवान श्रीकृष्ण के कर्मयोग और भगवान महावीर तथा भगवान बुद्ध की करुणा से जुड़ी रही है। हमारी परंपराओं ने जीवन को केवल भौतिक उपलब्धियों तक सीमित नहीं माना, बल्कि सत्य, सेवा, संयम, त्याग, कर्तव्य और मानव कल्याण को भी उतना ही महत्त्व दिया है। आस्था का वास्तविक अर्थ केवल पूजा-पाठ, अनुष्ठान और धार्मिक आयोजनों तक सीमित नहीं है। आस्था वह आंतरिक शक्ति है, जो मनुष्य को कठिन परिस्थितियों में धैर्य देती है, निराशा में आशा जगाती है और दूसरों के दुख को समझने की संवेदना पैदा करती है। जब आस्था मनुष्य को सदाचार, परोपकार और कर्तव्यनिष्ठा की ओर ले जाती है, तब वह समाज के निर्माण में सकारात्मक भूमिका निभाती है। दूसरी ओर, प्रगति का अर्थ केवल ऊँची इमारतें, चौड़ी सड़कें, बड़े उद्योग और आधुनिक मशीनें नहीं हैं। वास्तविक प्रगति वह है, जिसमें किसान समृद्ध हो, श्रमिक सुरक्षित हो, युवा रोजगार पाएं, महिलाओं को सम्मान मिले, बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त हो और बुजुर्गों को उपेक्षा नहीं, बल्कि

अपनापन मिले। जिस विकास में मनुष्य पीछे छूट जाए, वह अधूरा विकास है; और जिस आस्था में मानवता के लिए स्थान न हो, वह अपने मूल उद्देश्य से भटक जाती है।

विश्व में भारत की बढ़ती पहचान: आज भारत अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अपनी भूमिका को व्यापक बनाने का प्रयास कर रहा है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष अनुसंधान, डिजिटल भुगतान, औषधि निर्माण, उद्यमिता और सूचना प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में देश की क्षमताएँ विश्व का ध्यान आकर्षित कर रही हैं। भारतीय मूल के प्रतिभाशाली लोग अनेक देशों में शिक्षा, चिकित्सा, अनुसंधान, व्यापार और तकनीकी विकास में योगदान दे रहे हैं। भारत की योग परंपरा को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मिली पहचान, आयुर्वेद के प्रति बढ़ती रुचि, भारतीय भोजन, संगीत, साहित्य, सिनेमा और त्योहारों की लोकप्रियता हमारी सांस्कृतिक उपस्थिति को भी विस्तार देती है। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस इसका एक उल्लेखनीय उदाहरण है। यह बताता है कि भारत की परंपराएँ आधुनिक विश्व के लिए भी उपयोगी हो सकती हैं, बशर्ते उन्हें ज्ञान, प्रमाण, जिम्मेदारी और व्यापक मानवीय हित के साथ प्रस्तुत किया जाए। लेकिन हमें यह भी समझना होगा कि विश्व में सम्मान केवल हमारी प्राचीनता के कारण नहीं बढ़ता। सम्मान तब स्थायी बनता है, जब हमारी वर्तमान उपलब्धियाँ, लोकतांत्रिक संस्थाएँ, सामाजिक व्यवहार, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और मानवीय संवेदनशीलता ही उस प्राचीन विरासत की गरिमा को आगे बढ़ाती हैं। भारत की असली शक्ति यही हो सकती है कि वह अपनी जड़ों से जुड़ा रहे, लेकिन उसकी दृष्टि भविष्य पर टिकी रहे।

धार्मिक आस्था के साथ वैज्ञानिक दृष्टिकोण: आधुनिक युग में वैज्ञानिक सोच का महत्त्व लगातार बढ़ रहा है। ऐसे समय में भारत के लिए आवश्यक है कि वह अपनी धार्मिक और सांस्कृतिक विरासत का सम्मान करते हुए शिक्षा, अनुसंधान, तक, नवाचार और प्रमाण-आधारित ज्ञान को भी प्रोत्साहित करे। आस्था मनुष्य को नैतिक बल प्रदान कर सकती है, जबकि विज्ञान प्रकृति और संसार को समझने के साधन देता है। दोनों के क्षेत्र अलग-अलग हो सकते हैं, लेकिन विवेकपूर्ण समाज में उनके बीच अनावश्यक संघर्ष खड़ा करने की



-विक्रम दयाल

आवश्यकता नहीं है।

धार्मिक परंपराओं के नाम पर अंधविश्वास, भेदभाव अथवा किसी व्यक्ति की गरिमा को ठेस पहुंचाने वाली प्रथाओं को उचित नहीं ठहराया जाना चाहिए। उसी प्रकार आधुनिकता के नाम पर अपनी भाषा, संस्कृति, परिवार, लोककला और ऐतिहासिक विरासत को तुच्छ समझना भी बुद्धिमाना नहीं है। हमें ऐसी पीढ़ी तैयार करनी होगी, जो अपने अतीत को महानता का बखान करने या वर्तमान की उपलब्धियों पर गर्व करने की आराध्य के प्रति श्रद्धा रखे, लेकिन दूसरे की आस्था का अपमान न करे। जो तकनीक का उपयोग करे, पर मानवीय संबंधों को मशीनों के हवाले न कर दे। यही संतुलित दृष्टिकोण भारत की आधुनिकता के साथ सांस्कृतिक आत्मविश्वास प्रदान कर सकता है। सामाजिक समरसता ही राष्ट्रीय सम्मान की कसौटी: किसी राष्ट्र की प्रतिष्ठा का आकलन केवल उसकी आर्थिक शक्ति, सैन्य सामर्थ्य अथवा अंतरराष्ट्रीय प्रभाव से नहीं किया जा सकता। उसके नागरिकों के जीवन की गुणवत्ता, समाज में न्याय की स्थिति और विभिन्न समुदायों के बीच पारस्परिक सम्मान भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं। भारत की विविधता उसकी ऐतिहासिक विशेषता रही है। यहाँ अलग-अलग भाषाएँ, वेशभूषाएँ, धार्मिक परंपराएँ, खानपान और जीवन-पद्धतियाँ मिलकर एक व्यापक राष्ट्रीय संस्कृति का निर्माण करती हैं। इस विविधता को कमजोरी नहीं, बल्कि शक्ति बनाने की आवश्यकता है। यदि जाति के नाम पर किसी का अपमान होता है, धर्म के नाम पर वैमनस्य फैलता है, आर्थिक स्थिति के कारण किसी को हीन समझा जाता है अथवा महिलाओं की सुरक्षा और सम्मान की अनदेखी होती है, तो यह हमारे सामाजिक विकास के सामने गंभीर चुनौती है। विश्व में भारत का सम्मान तभी और अधिक सार्थक होगा, जब यहाँ का सामान्य नागरिक भी

सम्मानपूर्वक जीवन जी सके। गरीब को न्याय मिले, कमजोर को सुरक्षा मिले, मेहनतकश को उसके श्रम का उचित मूल्य मिले और प्रत्येक नागरिक को अपनी प्रतिभा विकसित करने का अवसर प्राप्त हो। राष्ट्रीय गौरव का सबसे उज्ज्वल रूप वह है, जिसमें देश की उपलब्धियों के साथ देश के प्रत्येक नागरिक की गरिमा भी सुरक्षित हो।

युवा शक्ति: परंपरा और परिवर्तन के बीच सेतु: भारत की युवा पीढ़ी देश के भविष्य की सबसे बड़ी आशा है। उसके सामने डिजिटल अर्थव्यवस्था, कुत्रिम बुद्धिमत्ता, अंतरिक्ष विज्ञान, उद्यमिता, पर्यावरण संरक्षण और वैश्विक प्रतिस्पर्धा जैसे अनेक अवसर हैं। लेकिन इसके साथ बेरोजगारी, कौशल की कमी, मानसिक दबाव, सामाजिक असमानता और भ्रामक सूचनाओं जैसी चुनौतियाँ भी मौजूद हैं। युवाओं को केवल अतीत की महानता का बखान करने या वर्तमान की उपलब्धियों पर गर्व करने तक सीमित नहीं रहना चाहिए। उन्हें उस महानता को अपने कर्मों से आगे बढ़ाने का अवसर मिलना चाहिए। यदि युवा अपनी संस्कृति से प्रेरणा लेकर आधुनिक विज्ञान में योगदान दें, ईमानदारी को जीवन का आधार बनाएँ, महिलाओं का सम्मान करें, सामाजिक भेदभाव से दूर रहें और राष्ट्रहित को व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर रखें, तो भारत की प्रगति को नई दिशा मिल सकती है। इसके लिए सरकार, शैक्षणिक संस्थानों, उद्योग जगत और समाज को मिलकर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, रोजगारोन्मुख प्रशिक्षण, अनुसंधान और नवाचार के अवसर बढ़ाने होंगे। युवा शक्ति को भाषणों से अधिक अवसर और नारों से अधिक परिणाम चाहिए।

आर्थिक विकास के साथ मानवीय संवेदना भी जरूरी: देश की अर्थव्यवस्था का विकास तभी जनकल्याणकारी माना जाएगा, जब उसका लाभ समाज के व्यापक वर्गों तक पहुँचे। महानगरों की चमक के साथ गाँवों का बुनियादी सुविधाएँ भी मजबूत हों। आधुनिक अस्पतालों के साथ प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाएँ सुलभ हों। तकनीकी संस्थानों के साथ सरकारी विद्यालयों में भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले। महंगाई से परेशान परिवार, रोजगार की तलाश में भटकते युवा, खेती की लागत से जूझते किसान और असंगठित क्षेत्र में काम करने वाले श्रमिक हमारी विकास यात्रा के महत्वपूर्ण हिस्से हैं। उनकी समस्याओं को समझना और उनका

समाधान करना राष्ट्रीय प्रगति की अनिवार्य शर्त है। विकास की योजनाओं का मूल्यांकन केवल घोषित लक्ष्यों से नहीं, बल्कि उनके वास्तविक परिणामों से होना चाहिए। क्या लोगों की आय और जीवन-स्तर में सुधार हुआ? क्या रोजगार के अवसर बढ़े? क्या शिक्षा और स्वास्थ्य अधिक सुलभ हुए? क्या समाज के कमजोर वर्गों को सुरक्षा मिली? इन प्रश्नों के ईमानदार उत्तर ही विकास के दावों को विश्वसनीयता प्रदान करेंगे। विश्व को क्या संदेश दे सकता है भारत?: भारत विश्व को यह संदेश दे सकता है कि आधुनिकता अपनाने के लिए सांस्कृतिक विज्ञान, उद्यमिता, पर्यावरण संरक्षण और वैश्विक प्रतिस्पर्धा जैसे अनेक अवसर हैं। लेकिन इसके साथ बेरोजगारी, कौशल की कमी, मानसिक दबाव, सामाजिक असमानता और भ्रामक सूचनाओं जैसी चुनौतियाँ भी मौजूद हैं। युवाओं को केवल अतीत की महानता का बखान करने या वर्तमान की उपलब्धियों पर गर्व करने तक सीमित नहीं रहना चाहिए। उन्हें उस महानता को अपने कर्मों से आगे बढ़ाने का अवसर मिलना चाहिए। यदि युवा अपनी संस्कृति से प्रेरणा लेकर आधुनिक विज्ञान में योगदान दें, ईमानदारी को जीवन का आधार बनाएँ, महिलाओं का सम्मान करें, सामाजिक भेदभाव से दूर रहें और राष्ट्रहित को व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर रखें, तो भारत की प्रगति को नई दिशा मिल सकती है। इसके लिए सरकार, शैक्षणिक संस्थानों, उद्योग जगत और समाज को मिलकर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, रोजगारोन्मुख प्रशिक्षण, अनुसंधान और नवाचार के अवसर बढ़ाने होंगे। युवा शक्ति को भाषणों से अधिक अवसर और नारों से अधिक परिणाम चाहिए।

आज दुनिया अनेक चुनौतियों से जूझ रही है—युद्ध, पर्यावरण संकट, आर्थिक असमानता, विश्वस्थान और सामाजिक तनाव। ऐसे समय में भारत का योगदान केवल अपनी उपलब्धियों का प्रदर्शन करना नहीं, बल्कि शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व, सतत विकास, अंतरराष्ट्रीय सहयोग और मानवीय कल्याण के लिए सार्थक प्रयास करना भी होना चाहिए। विश्व का सम्मान पाने की इच्छा स्वाभाविक है, लेकिन उससे भी अधिक महत्वपूर्ण है ऐसा आचरण करना, जो उस सम्मान को अर्जित करने योग्य बने।

शासन, समाज और नागरिक—तीनों की साझा जिम्मेदारी: राष्ट्रीय प्रतिष्ठा किसी एक सरकार, संस्था अथवा वर्ग का अकेला दायित्व नहीं होती। सरकार को पारदर्शिता, जवाबदेही, न्याय और जनकल्याण पर ध्यान देना चाहिए। प्रशासन को नागरिकों की समस्याओं का समाधान समय पर करना चाहिए। शैक्षणिक संस्थानों को ज्ञान के साथ चरित्र निर्माण पर भी बल देना चाहिए। मीडिया को तथ्यपरक और जिम्मेदार भूमिका निभानी चाहिए। वहीं समाज को अफवाहों, नफरत और भेदभाव से दूर रहकर संवाद की संस्कृति विकसित करनी होगी। नागरिकों को अपने अधिकारों के साथ कर्तव्यों का भी पालन करना

होगा। सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा, पर्यावरण संरक्षण, कानून का सम्मान, ज़रूरतमंदों की सहायता और सामाजिक सद्भाव जैसे कार्य किसी भी राष्ट्र का वास्तविक शक्ति को बढ़ाते हैं। आस्था हमें अच्छे कर्मों की प्रेरणा दे, प्रगति हमें बेहतर साधन उपलब्ध कराए और संविधान हमें न्याय, स्वतंत्रता, समानता तथा बंधुता के मूल्यों की दिशा दिखाए—तो भारत का विकास अधिक संतुलित, समावेशी और स्थायी हो सकता है। निष्कर्ष: नई पहचान का आधार बनेगा मानवता और विकास: भारत आज अपनी ऐतिहासिक विरासत और आधुनिक आकांक्षाओं के बीच एक महत्वपूर्ण यात्रा पर है। इस यात्रा में न तो अतीत के गौरव को भुलाने की आवश्यकता है और न भविष्य के अवसरों से मुँह मोड़ने की। आवश्यकता है कि हम अपनी परंपराओं से श्रेष्ठ मूल्यों को ग्रहण करें, वर्तमान की चुनौतियों का साहसपूर्वक सामना करें और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक अधिक न्यायपूर्ण, शिक्षित, समृद्ध तथा संवेदनशील राष्ट्र का निर्माण करें। आस्था यदि मनुष्य के भीतर सद्भाव जगाती है, तो वह समाज को जोड़ती है। प्रगति यदि आम नागरिक के जीवन को बेहतर बनाती है, तो वह राष्ट्र को मजबूत करती है। और जब दोनों के साथ सामाजिक न्याय, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, राष्ट्रीय एकता तथा मानवीय गरिमा जुड़ जाती है, तब विश्व में सम्मान केवल एक आकांक्षा नहीं रहता, बल्कि देश के सामूहिक आचरण और उपलब्धियों का परिणाम बन जाता है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि राष्ट्र की महानता केवल उसके गौरवशाली अतीत में नहीं, बल्कि उसके नागरिकों के उज्ज्वल वर्तमान और सुरक्षित भविष्य में भी दिखाई देती है। आइए, ऐसा भारत बनाने का संकल्प लें, जहाँ मदिरों की घटियों के साथ ज्ञान-विज्ञान की ध्वनि भी गुंजे, जहाँ संस्कृति की जड़ें गहरी हों और विकास के पंख ऊँचे, जहाँ धर्म के नाम पर द्वेष नहीं, बल्कि सदाचार की प्रेरणा मिले, और जहाँ प्रगति का लाभ अंतिम पक्षि में खड़े व्यक्ति तक पहुँचे। आस्था हमारी पहचान बने, प्रगति हमारा अभियान बने, सामाजिक समरसता हमारी शक्ति बने और मानवता विश्व में भारत के बढ़ते सम्मान का सबसे विश्वसनीय साधन बने। यही नया विश्व की प्रार्थना दिशा है, यही राष्ट्रीय गौरव का वास्तविक आधार है और यही वह संदेश है, जिसके माध्यम से भारत विश्व के सामने अपनी विशिष्ट पहचान को और अधिक सशक्त बना सकता है।



सड़क दुर्घटना में बाइक सवार मामा की मौत, भांजा गंभीर

सोनभद्र (उत्तरशक्ति)। जिले के बभनी थाना क्षेत्र के नधिरा-बखरिहवां मार्ग पर निमहवा पहरी के पास वृहस्पतिवार की रात करीब एक बजे अज्ञात वाहन की टक्कर से बाइक सवार मामा-भांजा गंभीर रूप से घायल हो गए। दोनों को पुलिस की मदद से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बभनी पहुंचाया गया। हालत गंभीर होने पर चिकित्सकों ने दोनों को जिला अस्पताल रेफर कर दिया। वहां चिकित्सकों ने 21 वर्षीय धानू को मृत घोषित कर दिया, जबकि उसके 18 वर्षीय भांजे राहुल की गंभीर हालत को देखते हुए उसे वाराणसी

ट्रामा सेंटर रेफर कर दिया गया। जानकारी के अनुसार, नधिरा के सवाकुंड निवासी विनोद कुमार का पुत्र धानू अपने भांजे राहुल पुत्र गोला निवासी अंजानी को बाइक से छोड़ने जा रहा था। इसी दौरान नधिरा-बखरिहवां मार्ग पर निमहवा पहरी के पास किसी अज्ञात वाहन ने उनकी बाइक में टक्कर मार दी। हादसे में दोनों सड़क पर गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गए। घटना के बाद मौके से गुजर रहे राहगीरों ने पुलिस की पीआरवी को सूचना दी। सूचना मिलते ही पीआरवी मौके पर पहुंची और दोनों घायलों को

उपचार के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बभनी पहुंचाया। प्राथमिक उपचार के बाद दोनों को जिला अस्पताल भेज दिया गया। वहां धानू की मौत हो गई, जबकि राहुल की हालत गंभीर बनी हुई है। युवक की मौत की खबर मिलते ही परिजनों में कोहराम मच गया। हादसे की सूचना नधिरा निवासी राजाराम और सुजीत कुमार ने दी। टक्कर मारने वाले अज्ञात वाहन के संबंध में विस्तृत जानकारी नहीं मिल सकी। प्रभारी निरीक्षक अरविंद कुमार सरोज ने बताया कि घटना की जांच की जा रही है।

केंद्रों का निरीक्षण किया। अधिकारियों ने कलेक्ट्रेट, विकास खंड सिकरारा, बक्शा,

स्नातक एवं शिक्षक एमएलसी चुनाव को लेकर डीएम और एसएसपी ने मतदान केंद्रों का किया निरीक्षण

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। उत्तर प्रदेश विधान परिषद के वाराणसी खंड स्नातक एवं खंड शिक्षक

निर्वाचन क्षेत्र का मतदान सकुशल, निष्पक्ष और शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न कराने के उद्देश्य से जिलाधिकारी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी सैमुअल पाल एन. तथा वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक डॉ.यशवीर सिंह ने विभिन्न मतदान

अधिकारियों को मतदाताओं की सुविधा के लिए पेयजल, शौचालय और अन्य आवश्यक सुविधाएं सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

जिलाधिकारी ने निर्वाचन आयोग के दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए मतदान प्रक्रिया को निष्पक्ष, पारदर्शी एवं शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न कराने पर जोर दिया। वहीं, कंट्रोल रूम के निरीक्षण के दौरान निर्वाचन संबंधी सूचनाओं के आदान-प्रदान, मतदान की निगरानी और शिकायतों के त्वरित निस्तारण की व्यवस्था दुरुस्त रखने के निर्देश दिए गए।

वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक डॉ. यशवीर सिंह ने सुक्षा व्यवस्था का जायजा लेते हुए संबंधित पुलिस अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए, ताकि मतदान के दौरान कानून-व्यवस्था बनी रहे और मतदाताओं को किसी प्रकार की परेशानी न हो।

जौनपुर में मनाया गया अमित शाह का जन्मदिन

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। केंद्रीय गुह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह के 62वें जन्मदिवस के अवसर पर जौनपुर में पूर्व लोकसभा प्रत्याशी एवं महाराष्ट्र के पूर्व गुह राज्यमंत्री कृपाशंकर सिंह के नेतृत्व में श्रवण बाधित लोगों को 62 कान की मशीनें वितरित की गईं। इस पहल का उद्देश्य श्रवण संबंधी समस्याओं का सामना कर रहे जरूरतमंद लोगों को सहायता उपलब्ध कराना तथा उनके दैनिक जीवन को अधिक सहज बनाने में सहयोग देना रहा।

इस अवसर पर कृपाशंकर सिंह ने जरूरतमंदों की सहायता और समाज के वंचित वर्गों के कल्याण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि जन्मदिवस जैसे

विशेष अवसरों को सेवा और जनकल्याण के कार्यों से जोड़कर समाज के जरूरतमंद लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने का प्रयास किया जाना चाहिए। आगे उन्होंने कहा कि श्रवण बाधित लोगों

कृपाशंकर सिंह द्वारा 62 जरूरतमंद लोगों को कान की मशीनें वितरित

के लिए कान की मशीनें उपयोगी सहायक उपकरण हैं। इनके माध्यम से सुनने में कठिनाई का सामना कर रहे लोगों को बातचीत करने, परिवार एवं समाज के साथ बेहतर संवाद स्थापित करने और सामाजिक गतिविधियों में भाग लेने में मदद मिल

सकती है। कार्यक्रम के माध्यम से सेवा, सहयोग और सामाजिक उत्तरदायित्व का संदेश दिया गया। जरूरतमंद लोगों को सहायक उपकरण उपलब्ध कराना उनके आत्मविश्वास को बढ़ाने तथा उन्हें सामाजिक जीवन में अधिक सक्रिय भागीदारी के लिए प्रोत्साहित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। इस मौके पर भाजपा प्रवक्ता ओमप्रकाश सिंह,ब्लॉक प्रमुख राहुल सिंह, विनय सिंह, मुकेश सिंह, रत्नाकर सिंह, धर्मेन्द्र यादव, श्याम राज सिंह, महामंत्री पिण्ण गुप्ता, उपाध्यक्ष पमैंद्र चौहान, रामकैवल यादव, सुधीर सिंह,जिला दिव्यांजन अधिकारी राजेश नागर, डॉ राजेश सिंह, सहित सैकड़ों लोग रहे।

पीयू में शैक्षणिक कार्य प्रभाग का हुआ गठन

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय में शिक्षण, अधिगम और समग्र शैक्षिक प्रशासन को सुदृढ़, परिणामोन्मुख व गुणवत्तापूर्ण बनाने के उद्देश्य से कुलपति प्रो. राकेश कुमार सिंह के निर्देशानुसार 'शैक्षणिक कार्य प्रभाग' (Academic Affairs Division) का गठन कर विस्तृत कार्य व दायित्व निर्धारित किए गए हैं। इस संबंध में विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. विनोद कुमार सिंह द्वारा कार्यालय आदेश जारी कर दिया गया है।

आदेश के अनुसार विश्वविद्यालय तथा संबद्ध महाविद्यालयों में शैक्षिक योजना, पाठ्यचर्या सुधार, प्रवेश व शैक्षणिक प्रशासन में समन्वय के लिए उच्च स्तरीय टीम का गठन किया गया है। इसके तहत वरिष्ठ प्रोफेसर प्रो. मानस पाण्डेय को शैक्षणिक कार्य प्रभाग का निदेशक बनाया गया है, जो समग्र

शैक्षणिक नेतृत्व एवं प्रशासन की जिम्मेदारी संभालेंगे।

वहीं प्रो. देवराज सिंह को सदस्य के रूप में पाठ्यचर्या, राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 सुधार, क्रेडिट फ्रेमवर्क, शैक्षणिक

प्रो.मानस पाण्डेय बने निदेशक, प्रो.देवराज सिंह और प्रो.रवि प्रकाश को सौंपी गई अहम जिम्मेदारी

अभिलेख तथा वैधानिक अनुश्रवण का दायित्व सौंपा गया है। टीम के तीसरे सदस्य के रूप में प्रो. रवि प्रकाश को शैक्षणिक कैलेंडर, शिक्षण व्यवस्था, प्रवेश प्रक्रिया तथा विभिन्न शैक्षणिक कार्यक्रमों के विकास व समन्वय का जिम्मा दिया गया है।

वार्षिक कैलेंडर, गुणवत्ता और एन इपी- 2020 पर रहेगा विशेष जोर- प्रभाग द्वारा वार्षिक शैक्षणिक कैलेंडर तैयार करने, कक्षाओं की नियमितता, शिक्षकों

के कार्यभार, सतत मूल्यांकन तथा परीक्षा व परिणामों की समीक्षा सुनिश्चित की जाएगी। इसके साथ ही अध्ययन बोर्डों के माध्यम से पाठ्यक्रमों की समयबद्ध समीक्षा, उद्योग जगत की जरूरतों के अनुरूप कौशल विकास, इंटरनशिप और परिणाम आधारित शिक्षा को बढ़ावा देने पर कार्य किया जाएगा।

कार्यालय संचालन के लिए प्रशासनिक अमला तैनात- शैक्षणिक कार्य प्रभाग के सुचारू संचालन और समयबद्ध क्रियान्वयन के लिए प्रशासनिक अधिकारियों और कर्मचारियों की भी तैनाती की गई है। इनमें प्रशासनिक अधिकारी के रूप में मधुसूदन यादव, प्रधान सहायक शमशेर सिंह, कनिष्ठ सहायक मो. दिलगीर हसन, ऋचा सिंह, रवीन्द्र कुमार ओझा, पार्वती देवी के साथ कंप्यूटर ऑपरेटर राम यादव एवं अन्य की तैनाती की गई है।

पीएचडी व्यवस्था को पारदर्शी व गतिमान बनाने के लिए नई टीम, प्रो.राजकुमार बने निदेशक

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय में शोध प्रशासन को चुस्त-दुरुस्त और पीएचडी प्रक्रिया को पारदर्शी व गतिमान बनाने के लिए कुलपति प्रो. राकेश कुमार सिंह के निर्देश पर अनुसंधान एवं विकास सेल की नई टीम का गठन कर विस्तृत कार्यक्षेत्र निर्धारित किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं यूजीसी के तय मानकों के अनुपालन के साथ गठित इस व्यवस्था में प्रो. राजकुमार को अनुसंधान एवं विकास का निदेशक नियमित किया गया है। कुलसचिव डॉ. विनोद कुमार सिंह द्वारा जारी आदेश के अनुसार निदेशक को शोध प्रवेश से लेकर उपाधि प्रदान करने, शोधप्रबंध के अभिलेखीकरण,

निगरानी, नीति निर्धारण और लॉबिंग प्रकरणों के निस्तारण का समग्र नेतृत्व सौंपा गया है।

कार्यकारी टीम में संकाय सदस्यों को अलग-अलग दायित्व सौंपते हुए डॉ. मनीष कुमार गुप्ता को पीएचडी प्रवेश, अभिलेख, शोध निदेशक/सीट पंजिका, आरडीसी कैलेंडर व डिजिटल कार्यप्रणाली, प्रो. संतोष कुमार को कोर्स वर्क, शोधार्थी प्रवर्ति, सेमिनेटर समीक्षा, प्रशिक्षण एवं जेआरएफ से एसरआरएफ मूल्यांकन; प्रो. नरेन्द्र कुमार सिंह को शोध पद्धति, निमित्त निदेशक के शोध प्रवेश, मार्गदर्शन व प्रयोगशाला पद्धतियां तथा प्रो. विनोद कुमार गुप्ता को ग्री-सबमिशन, शोधप्रबंध कार्यवाही,

परीक्षक, मूल्यांकन, मौखिक परीक्षा, उपाधि अभिलेख व शोध डैशबोर्ड का जिम्मा दिया गया है। यह समिति पीएचडी प्रक्रिया पुस्तिका और अस्थादेश का नया प्रारूप तैयार कर सक्षम निकायों से अनुमोदित करारपी।

वहीं सेल के सहयोग हेतु प्रशासनिक अधिकारी रघुनन्दन यादव, प्रधान सहायक गुलाब चन्द व राजेन्द्र प्रताप सिंह, कनिष्ठ सहायक नीलम सिंह, कम्प्यूटर ऑपरेटर सुशील प्रजापति व प्रदीप कुमार सिंह और परिरचर अंजनी तिवारी व जैगेन्द्र कुमार विश्वकर्मा को तैनात किया गया है। यह कार्यालय आदेश तत्काल प्रभाव से लागू कर दिया गया है।

डाल्हनपुर में वृद्धजनों का स्वास्थ्य परीक्षण, बुजुर्गों को स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए किया जागरूक

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। अंतरराष्ट्रीय वृद्धजन दिवस माह (1 अक्टूबर से 31 अक्टूबर 2026) के अंतर्गत उमाश्री सिंह स्वशसी राज्य चिकित्सा महाविद्यालय, जौनपुर की ओर से ग्राम डाल्हनपुर में वृद्धजनों के स्वास्थ्य परीक्षण एवं स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य बुजुर्गों के स्वास्थ्य की देखभाल, बीमारियों की समय पर पहचान तथा उन्हें बेहतर जीवनशैली के प्रति जागरूक करना रहा।

महाविद्यालय के प्रधानाचार्य प्रो. (डॉ.) आर.बी. कमल के दिशा-निर्देश में कान्युनिटी मेडिसिन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अनुज सिंह के नेतृत्व में आयोजित इस कार्यक्रम में वृद्धजनों के स्वास्थ्य की जांच की गई। इस दौरान उन्हें वृद्धावस्था में होने वाली सामान्य स्वास्थ्य समस्याओं, जैसे उच्च रक्तचाप, मधुमेह, जोड़ों में दर्द, दृष्टि एवं श्रवण

संबंधी परेशानियों और अन्य शारीरिक समस्याओं के प्रति जागरूक किया गया।

स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम में बुजुर्गों को संतुलित एवं पौष्टिक आहार लेने, नियमित शारीरिक गतिविधियां करने, व्यक्तिगत स्वच्छता बनाए रखने और पर्याप्त नींद लेने की सलाह दी गई। साथ ही, समय-समय पर स्वास्थ्य परीक्षण कराने तथा किसी भी प्रकार की शारीरिक परेशानी होने पर उसे नजरअंदाज न करते हुए चिकित्सकीय परामर्श लेने के महत्व को समझाया गया। चिकित्सकों ने बताया कि नियमित जांच और समय पर उपचार से कई गंभीर बीमारियों एवं उनकी जटिलताओं से बचाव किया जा सकता है।

महाविद्यालय के प्रधानाचार्य प्रो. (डॉ.) आर.बी. कमल ने अपने संदेश में कहा कि वृद्धजन परिवार और समाज की अमूल्य धरोहर हैं।

उनके अनुभव, ज्ञान और जीवन मूल्यों से समाज को निरंतर मार्गदर्शन मिलता है। ऐसे में सभी का दायित्व है

कार्यक्षमता में बदलाव आते हैं। ऐसे में नियमित स्वास्थ्य परीक्षण और समय पर उपचार बेहद आवश्यक



कि बुजुर्गों को सम्मान, सुरक्षा और बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएं। उन्होंने वृद्धजनों के स्वास्थ्य एवं कल्याण के प्रति सामाजिक जागरूकता बढ़ाने की आवश्यकता पर भी जोर दिया।

मुख्य चिकित्सा अधीक्षक प्रो. (डॉ.) ए.ए. जाफरी ने कहा कि वृद्धावस्था में शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता और शारीरिक

जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि समुदाय स्तर पर इस तरह के स्वास्थ्य कार्यक्रम आयोजित करने से जरूरतमंद लोगों तक स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच बढ़ती है और बीमारियों के प्रति जागरूकता विकसित होती है।

इस स्वास्थ्य परीक्षण एवं जागरूकता अभियान में डॉ. मुदित चौहान, डॉ. पूजा पाठक, डॉ. नवीन कुमार, डॉ. आदर्श मौर्य तथा इंटर आकाश प्रकाश, आकाश शर्मा अदिति मिश्रा और आदित्य कुमार सिंह ने सक्रिय योगदान दिया। इसके अलावा कर्मचारी रमाकांत एवं सौरभ का भी विशेष सहयोग रहा। चिकित्सा महाविद्यालय की यह पहल वृद्धजनों को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने, बीमारियों की समय पर पहचान सुनिश्चित करने तथा समाज में बुजुर्गों के प्रति सम्मान और स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता बढ़ाने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास साबित हुई।

पूर्वांचल विश्वविद्यालय में एआई एवं एमएल लर्निंग सीरीज का चौथा व्याख्यान संपन्न

वीका टूल से रिग्रेशन एल्गोरिदम के व्यावहारिक उपयोग के टिप्स दिए

♦ व्याख्यान में 96 छात्र-छात्राओं ने किया प्रतिभाग

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर के फैकल्टी ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी के कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग विभाग द्वारा कुलपति प्रो. राकेश कुमार सिंह के निर्देश पर संचालित ह्यूएआई एवं एमएल लर्निंग सीरीज का चौथे व्याख्यान का शुक्रवार को सफल आयोजन किया गया। ह्यूरिग्रेशन एल्गोरिदम विषय पर आयोजित इस व्याख्यान में विभिन्न शैक्षणिक कार्यक्रमों के 96 छात्र-छात्राओं ने प्रतिभाग किया। सत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को मशीन लर्निंग में रिग्रेशन की मूलभूत अवधारणाओं, प्रमुख एल्गोरिदम तथा उनके व्यावहारिक अनुप्रयोगों से परिचित कराना था।

इस व्याख्यान में मुख्य विशेषज्ञ एवं रिसर्सर्स पर्सन डॉ. अनुश्री अग्रवाल ने विद्यार्थियों को रिग्रेशन एल्गोरिदम की कार्यप्रणाली तथा वीका टूल के माध्यम से उनके व्यावहारिक उपयोग की जानकारी दी।

व्याख्यान के दौरान विद्यार्थियों ने लीनियर रिग्रेशन तथा अन्य प्रमुख

रिग्रेशन तकनीकों की कार्यप्रणाली को समझा। विशेषज्ञ ने बताया कि रिग्रेशन मशीन लर्निंग की एक महत्वपूर्ण तकनीक है, जिसका उपयोग निरंतर संख्यात्मक मानों का पूर्वानुमान लगाने के लिए किया जाता



है। इसके अंतर्गत घरों की कीमत का पूर्वानुमान, बिक्री का अनुमान तथा मौसम संबंधी आंकड़ों का विश्लेषण जैसे वास्तविक जीवन के उदाहरणों पर चर्चा की गई।

सत्र में वीका टूल के माध्यम से डेटा सेट का विश्लेषण करने, उपयुक्त रिग्रेशन एल्गोरिदम का चयन करने तथा मशीन लर्निंग मॉडल तैयार करने की प्रक्रिया को समझाया गया। डॉ. अग्रवाल ने बताया कि प्रभावी मशीन लर्निंग मॉडल विकसित करने के लिए डेटा की

गुणवत्ता, उपयुक्त एल्गोरिदम का चयन तथा मॉडल के परिणामों का सही मूल्यांकन अत्यंत आवश्यक है। वीका जैसे टूल विद्यार्थियों को विभिन्न एल्गोरिदम का प्रयोग करने, उनके परिणामों की तुलना

करने तथा वास्तविक समस्याओं के समाधान विकसित करने का अवसर प्रदान करते हैं। कार्यक्रम आयोजन समिति के सदस्य दिलीप कुमार यादव, अशोक कुमार यादव एवं कृष्ण कुमार यादव ने कार्यक्रम का सफलतापूर्वक संचालन किया। उक्त व्याख्यान ने विभाग के शिक्षक डॉ. संतोष कुमार यादव, प्रवीण कुमार पाण्डेय, डॉ. दिव्येंद्र कुमार मिश्रा, रितेश कुमार एवं दीपति पाण्डेय सहित अन्य शिक्षकगण भी उपस्थित रहे।

महा हड़ताल एवं धरना प्रदर्शन में पहुंचे जौनपुर साधन सहकारी समिति के सचिव

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। एक तरफ जहां खेतों में खाद की कमी से किसान उद्वेलित हैं, वहीं दूसरी तरफ साधन सहकारी समिति के सचिव अपनी मांगों को लेकर मुखर हो उठे हैं। जौनपुर जिले के समस्त साधन सहकारी समिति के सचिव अपनी विभिन्न न्यायोचित मांगों और वितरण व्यवस्था के संकट को लेकर लखनऊ में चल रहे महा हड़ताल एवं धरना-प्रदर्शन में सम्मिलित होने पहुंच गए हैं। शुक्रवार को धरना प्रदर्शन का दूसरा दिन है। इस सामूहिक विरोध प्रदर्शन के कारण स्थानीय स्तर पर समितियों में ताले लटके हुए हैं, जिससे खाद वितरण की प्रक्रिया पूरी तरह बाधित हो गई है और कृषकों की व्याकुलता दोगुनी हो गई है। बदलापुर क्षेत्र के सहकारिता विभाग के अधिकारियों (एडीओ कोऑपरेटिव) नागेंद्र प्रताप का कहना है कि क्षेत्र की समितियों की मांग का भौतिक सत्यापन कर जनपद मुख्यालय को भेज दिया गया है।प्रशासनिक स्तर से आश्वासन दिया जा रहा है कि शीघ्र ही डीएपी क्षेत्र की पर्याप्त खेप समितियों तक पहुंचा दी जाएगी, जिससे किसानों को राहत मिल सके और बंद पड़ी

समितियों का सुचारू संचालन सुनिश्चित किया जा सके।

जौनपुर साधन सहकारी समिति



के कार्यकारी अध्यक्ष वीर बहादुर सिंह के समर्थन में सैकड़ों सचिन लखनऊ के इको गार्डन में धरना प्रदर्शन में शामिल हैं। कार्यकारी अध्यक्ष सिंह का कहना है कि उत्तर प्रदेश सहकारी समिति कर्मचारी संघ अपनी मांगों के समर्थन में तकरीबन दर्जनों बार अधिकारियों तक न्याय की गुहार लगाई है किंतु आज तक न्याय नहीं मिल पा रहा है। उन्होंने बताया कि प्रांतीय नेतृत्व उत्तर प्रदेश सहकारी समिति कर्मचारी संघ लखनऊ द्वारा 22 अक्टूबर से अपने वेतन सम्बन्धित मांगों के सम्बन्ध में

लखनऊ के इको गार्डन में धरना एवं पूर्णकालिक हड़ताल करने हेतु अन्य संगठनों के साथ ही साथ अपनी

सहमति व्यक्त की है। कार्यकारी अध्यक्ष वीर बहादुर सिंह ने समस्त सचिव, आंकिक, चौकीदार से अनुरोध किया है कि सभी लोग धरना प्रदर्शन में शामिल होकर सहयोग करें ताकि कार्यक्रम सफल हो सके। धरना प्रदर्शन में कार्यकारी अध्यक्ष वीर बहादुर सिंह पवन तिवारी, प्रशान्त सिंह, दुर्गा प्रसाद दुबे, विश्वप्रकाश दुबे, दिनेश सिंह, लालजी दुबे, राजेश कुमार सिंह, प्रदीप सिंह, राहुल सिंह, संतोष सिंह, संदीप सिंह, विनय सिंह, राजेंद्र प्रसाद यादव, महेश चंद्र गुप्ता आदि सैकड़ों लोग मौजूद हैं।

सिकरारा पीएचसी का औचक निरीक्षण, अनुपस्थित चिकित्सा अधिकारी का वेतन रोकने के निर्देश

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. गंगाराम गौतम ने प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र सिकरारा का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान चिकित्सा अधिकारी डॉ. शांशंक शॉडिल कई दिनों से अनुपस्थित पाए गए, जिस पर सीएमओ ने उनका वेतन रोकने के निर्देश दिए।

निरीक्षण में स्वास्थ्य केंद्र की साफ-सफाई संतोषजनक मिली। सीएमओ ने मरीजों का उपचार, आवश्यक जांच, आभा आईडी के माध्यम से पंजीकरण और गर्भवती महिलाओं की नियमित एमनसी जांच सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। औषधि भंडार में 165 प्रकार



की दवाएं उपलब्ध मिलीं।

अनुपलब्ध दवाओं को तत्काल मांगकर मरीजों को उपलब्ध कराने को कहा गया। निरीक्षण के दौरान एआरबी और एएसवी भी उपलब्ध पाई गईं। टीबी नियंत्रण कार्यक्रम के तहत केंद्र पर 20 टीबी और 13 एमडीआर-टीबी के मरीज दर्ज मिले, जिनमें नियमित दवाएं दी जा रही हैं। सीएमओ ने सभी मरीजों का निर्धारित प्रोटोकॉल के अनुसार उपचार जारी रखने और लोगों को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने के निर्देश दिए।

गंगा के आंगन में गूंजेगा भारत का शौर्य, काशी में मोदी: राजनाथ

वाराणसी। गंगा की लहरें, घाटों की भव्यता और आसमान में भारतीय वायुसेना के लड़ाकू विमानों की गर्जना...। काशी के आंगन में 25 अक्टूबर को ऐसा दृश्य आकार लेने जा रहा है, जहां अध्यात्म की नगरी में भारत की सामरिक शक्ति का परचम लहराएगा। गंगा के ऊपर राफेल की गर्जना, तेजस की रफ्तार और सूर्यकिरण की कलाबाजियां देश की सैन्य क्षमता का ऐसा विहंगम दृश्य प्रस्तुत करेगी, जिसे देखने के लिए काशी ही नहीं, आसपास के जिलों से भी बड़ी संख्या में लोगों के पहुंचने की संभावना है। ह्रावेंस ओवर गंगाह्रद के इस महाआयोजन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की मौजूदगी इसे राष्ट्रीय महत्व का कार्यक्रम बनाएगी। प्रधानमंत्री 25 अक्टूबर को काशी पहुंचेंगे। प्रस्तावित कार्यक्रम के अनुसार, वह सेवापुरी क्षेत्र के



खोचवां स्थित अरविंद मिल में महिला कमियों से संवाद करेंगे। इसके बाद पुलिस लाइन होते हुए नमो घाट पहुंचकर वायुसेना के हवाई प्रदर्शन के साक्षी बनेंगे। दूसरी ओर, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के 24 अक्टूबर की शाम वाराणसी पहुंचने का कार्यक्रम है। वह मंदिरों में दर्शन-पूजन के बाद 39 जीटीसी में रात्रि विश्राम करेंगे और अगले दिन प्रधानमंत्री के साथ एयर शो देखेंगे। हालांकि, दोनों नेताओं के कार्यक्रमों की अंतिम समय-सारिणी प्रशासन की आधिकारिक पुष्टि के अधीन

रहेगी। भारतीय वायुसेना के 94वें स्थापना वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित ह्रावेंस ओवर गंगाह्रद में आधुनिक लड़ाकू विमानों, परिवहन विमानों और हेलीकॉप्टरों की क्षमता का प्रदर्शन होगा। राफेल, सुखोई-30 एमकेआई, तेजस, मिग-29 और मिराज-2000 जैसे विमानों की गर्जना गंगा के ऊपर गूंजेगी। सूर्यकिरण एरोबेटिक टीम की सधी हुई कलाबाजियां आसमान में रंगों और रोमांच की इबारत लिखेंगी। परिवहन विमानों और हेलीकॉप्टरों की भागीदारी इस प्रदर्शन को और व्यापक बनाएगी। यह आयोजन केवल हवाई करतबों का प्रदर्शन नहीं, बल्कि आधुनिक भारत की रक्षा तैयारियों, तकनीकी दक्षता और वायुसेना के अनुशासन को करीब से देखने का अवसर है। गंगा के विस्तृत प्रवाह और काशी के ऐतिहासिक घाटों की पृष्ठभूमि में

उड़ान भरते विमान भारतीय सैन्य सामर्थ्य और सांस्कृतिक विरासत का अनूठा मेल प्रस्तुत करेंगे। प्रधानमंत्री के कार्यक्रम में सेवापुरी के खोचवां स्थित अरविंद मिल का दौरा भी महत्वपूर्ण है। यहां प्रशिक्षित महिला कर्मियों से संवाद के जरिए रोजगार, आत्मनिर्भरता और महिला सशक्तीकरण की पहल को सामने लाने की तैयारी है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार, इकाई में करीब 300 महिलाओं को प्रशिक्षण देकर रोजगार से जोड़ने की पहल की गई है। काशी के इस दौरे में एक ओर आसमान में देश की सैन्य शक्ति का प्रदर्शन होगा, तो दूसरी ओर जमीन पर महिला श्रम, हुनर और आत्मनिर्भरता की तस्वीर भी सामने आएगी। यही इस यात्रा का व्यापक सामाजिक संदर्भ है। प्रधानमंत्री के स्वागत के लिए भाजपा ने शहर और जिले में विभिन्न स्थानों पर तैयारियां

की हैं। प्रस्तावित कार्यक्रम के तहत 13 स्थानों पर स्वागत की व्यवस्था की गई है। ढोल-नगाड़े, डमरू दल, शंखनाद और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के साथ पुष्पवर्षा की तैयारी है। पुलिस लाइन से नमो घाट तक स्वागत के दौरान काशी की सांस्कृतिक पहचान को प्रदर्शित करने की योजना है। हालांकि, वीआईपी आवागमन और एयर शो को देखते हुए सुरक्षा तथा यातायात व्यवस्था सर्वोपरि रहेगी। प्रशासन की कोशिश है कि स्वागत कार्यक्रमों के साथ आम नागरिकों की आवाजाही भी व्यवस्थित बनी रहे। प्रधानमंत्री और रक्षा मंत्री की मौजूदगी को देखते हुए सुरक्षा के बहुस्तरीय इंतजाम किए गए हैं। उपलब्ध प्रशासनिक जानकारी के अनुसार, करीब 11,900 पुलिसकर्मियों की तैनाती की योजना है। पुलिस, पीएसी, आरएफए,

एटीएस, एनडीआरएफ, एसडीआरएफ और जल पुलिस के जवान सुरक्षा तथा आपात परिस्थितियों से निपटने की जिम्मेदारी संभालेंगे। नमो घाट और आसपास के क्षेत्रों में भीड़ प्रबंधन, निगरानी और बचाव के इंतजाम किए जा रहे हैं। गंगा में जल पुलिस की तैनाती के साथ चिकित्सा सहायता और आपात सेवाओं को सक्रिय रखने की तैयारी है। आयोजन के दौरान यातायात में बदलाव भी लागू रहेंगे। नाव संचालन और घाटों तक पहुंच के संबंध में जारी निर्देशों का पालन करना जरूरी होगा। प्रशासन ने संभावित बड़ी भीड़ को ध्यान में रखते हुए व्यवस्थाएं की हैं। लोगों से निर्धारित मार्गों का उपयोग करने, पुलिस के निर्देशों का पालन करने और असुरक्षित भवनों की छतों पर भीड़ नहीं लगाने की अपील की गई है।

IMDके अध्ययन में खुलासा: मराठवाड़ा और पश्चिमी विदर्भ सूखे हुए, जबकि कोंकण तट हुआ ज्यादा नम

मुंबई/पुणे। भारत मौसम विज्ञान विभाग (IMD), पुणे और भारतीय उष्णकटिबंधीय मौसम विज्ञान संस्थान के वैज्ञानिकों के एक अध्ययन के अनुसार, जो कटऊकी सहकर्मी-समीक्षित पत्रिका 'मौसम' (MAUSAM) में प्रकाशित हुआ है, पिछले तीन दशकों में मराठवाड़ा और पश्चिमी विदर्भ एक अधिक गर्म, सूखे जलवायु क्षेत्र में चले गए हैं, जबकि भारत का सबसे अधिक बारिश वाला जलवायु क्षेत्र कोंकण और गोवा, तटीय कर्नाटक और केरल तक विस्तारित हो गया है। जलवायु क्षेत्रों को तापमान और वर्षा के आधार पर परिभाषित किया जाता है। शोधकर्ताओं ने IMD के अपने अवलोकनों का उपयोग करते हुए 1951-1980 से 1991-2020 तक लगातार 30-वर्षीय अवधियों (जो जलवायु मापने का मानक समय है) के लिए भारत का जलवायु नक्शा फिर से तैयार किया। 1961-1990 में, मराठवाड़ा और पश्चिमी विदर्भ ज्यादातर उष्णकटिबंधीय सवाना क्षेत्र में थे, जो साल भर गर्म और लंबे सूखे मौसम के साथ रहता है, लेकिन 1991-2020 तक वे गर्म अर्ध-शुष्क क्षेत्र में चले गए थे, जो गर्म और कम बारिश वाला होता है। लेखक इस बदलाव का मुख्य कारण दिन और रात के तापमान में वृद्धि को बताते हैं। तट के साथ, देश का सबसे अधिक बारिश वाल उष्णकटिबंधीय मानसून क्षेत्र, जहां भारी मौसमी बारिश होती है, कोंकण, गोवा तटीय कर्नाटक और केरल में और आगे तक फैल गया है। महाराष्ट्र के भीतरी हिस्सों में हुए बदलाव पूरे मध्य भारत के आंकड़ों में नहीं दिखते हैं, जहां इस अवधि में गर्म अर्ध-शुष्क क्षेत्र वास्तव में थोड़ा सिकुड़ गया था। इसलिए यह अध्ययन के नक्शे हैं, न कि इसके क्षेत्रीय कुल आंकड़े, जो राज्य में क्या हुआ है, यह बताते हैं। तट के साथ सबसे अधिक बारिश वाले क्षेत्र का फैलाव अध्ययन के एक व्यापक पैटर्न के अनुरूप है, जिसमें दक्षिणी भारत में बारिश बढ़ी है,

विभागों तथा अंचल कार्यालयों को लाला लाजपतराय राजभाषा शील्ड योजना के अंतर्गत पुरस्कृत किया



मुंबई। देश के दूसरे सबसे बड़े सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक, पंजाब नेशनल बैंक के द्वारका, नई दिल्ली स्थित प्रधान कार्यालय में हिंदी माह के उपलक्ष्य में राजभाषा समारोह का भव्य आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता अशोक चंद्र, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, अमित कुमार श्रीवास्तव, कार्यपालक निदेशक, राघवेंद्र कुमार, मुख्य सतर्कता अधिकारी (सीवीओ) एवं अन्य मुख्य महाप्रबंधकगण, महाप्रबंधकगण व विभिन्न अंचलों से पधारे पुरस्कार विजेता अंचल प्रबंधक भी विशेष रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम का

शुभारंभ एमडी एवं सीईओ महोदय एवं शीर्ष कार्यपालकों द्वारा दीप प्रज्वलन कर किया गया। माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी एवं कार्यपालक निदेशकगणों द्वारा लाला लाजपत राय राजभाषा शील्ड प्रतियोगिताओं के विजेताओं को शील्ड प्रदान की गई। इस अवसर पर बैंक की गृह पत्रिका पीएनबी प्रतिभा, राजभाषा चित्रकथा और डिजिटल लाइब्रेरी (सीवीओ) एवं अन्य मुख्य महाप्रबंधकगण, महाप्रबंधकगण व विभिन्न अंचलों से पधारे पुरस्कार विजेता अंचल प्रबंधक भी विशेष रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम का

फ्रांस में फिर हिंसक प्रदर्शनों की आशंका, 70 हजार सुरक्षाकर्मी तैनात हेलीकॉप्टरों और बख्तरबंद वाहनों से निगरानी



नई दिल्ली। फ्रांस में देशव्यापी प्रदर्शनों के आह्वान के बीच हिंसा की आशंका बढ़ गई है। हाल के दिनों में आगजनी, तोड़फोड़ और लूटपाट की घटनाओं के महंनजर सरकार ने सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर दी है। शनिवार को प्रस्तावित प्रदर्शनों को देखते हुए देशभर में करीब 70 हजार पुलिसकर्मियों और सुरक्षाकर्मीयों को तैनात किया गया है। हेलीकॉप्टरों से निगरानी के साथ-साथ बख्तरबंद वाहनों और वाटर कैनन की भी मदद ली जाएगी। सरकार ने प्रदर्शनकारियों को चेतावनी दी है कि हिंसा और सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुंचाने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई होगी। इस बीच, एपी के अनुसार, शुक्रवार को पेरिस के पश्चिम में स्थित ट्रेप्स के पास गोलीबारी में एक व्यक्ति की मौत हो गई और 12 साल की बच्ची समेत चार लोग घायल हो गए। आरोपित को गिरफ्तार कर लिया गया है। मामले की जांच आतंकवाद रोधी अभियोजन कार्यालय को सौंप दी गई

है। जांचकर्ता यह पता लगा रहे हैं कि घटना के पीछे आतंकवादी, नस्ली या धार्मिक वजह तो नहीं थी। ट्रेप्स के मेयर अली राबेह के मुताबिक, आरोपित ने अपनी कार से गोलीबारी की। राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों ने घटना पर दुःख जताया है। गौरतलब है कि सितंबर के आखिर में स्कूलों की खराब स्थिति और शिक्षकों की कमी को लेकर प्रदर्शनों के दौरान झड़पें शुरू हो गईं। यह आंदोलन जल्द ही पूरे देश में सरकार विरोधी प्रदर्शनों में बदल गया, जिसके पीछे बढ़ती महंगाई, ईंधन की ऊंची कीमतें और सार्वजनिक क्षेत्र के बजट में कटौती जैसे कारण थे। फ्रांस में छत्र संगठनों, सीजीटी श्रम संघ और येलो वेस्ट आंदोलन से जुड़े कार्यकर्ताओं ने प्रदर्शनों में शामिल होने की तैयारी की है।

रॉयटर्स के अनुसार, राष्ट्रपति मैक्रों, पीएम सेबास्तियान लेकोर्नु के साथ बैठक के बाद आंतरिक मंत्री लारेंट नुजेन ने कहा कि सोशल मीडिया पर कट्टर वामपंथी समूहों की ओर से हिंसा, तोड़फोड़ और

लूटपाट के लिए उकसाने वाले संदेश प्रसारित किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि पुलिस को हिंसा में शामिल लोगों के खिलाफ सख्ती से मुंहबंद करने के निर्देश दिए गए हैं। उन्होंने कहा कि अधिकारियों ने कट्टर वामपंथी समूहों की ओर से कार्यकर्ताओं को सार्वजनिक इमारतों को निशाना बनाते हुए हमले करने के आह्वान से जुड़ी सैकड़ों आनलाइन काल की पहचान की है। दंगाइयों के प्रति विव्कुल नरमी भी नहीं जाएगी। सुरक्षा इंतजामों के तहत पेरिस के लूबरे समेत कई संग्रहालयों को बंद रखने और प्रस्तावित कार्यक्रमों व समारोहों को बंद करने का फैसला किया गया है। सार्वजनिक इमारतों, सिटी हाल और अन्य संवेदनशील स्थलों की सुरक्षा के लिए पुलिस की विशेष इकाइयां भी तैनात रहेंगी।

ट्रेड के अनुसार, फ्रांस समेत यूरोप के कुछ देशों में संभावित हिंसक प्रदर्शनों को देखते हुए भारत के विदेश मंत्रालय ने अपने नागरिकों को सावधानी बरतने की सलाह दी है। लोगों से भीड़भाड़ वाले इलाकों से दूर रहने, बाहर निकलने से पहले स्थानीय हालात की जानकारी लेने और भारतीय दूतावासों के संपर्क में रहने को कहा गया है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल के अनुसार, फ्रांस, इटली और बेल्जियम में भारतीय दूतावासों को सतर्क कर दिया गया है। वे घटनाक्रम पर नजर रख रहे हैं और वहां रह रहे भारतीय समुदाय के संपर्क में हैं।

डीपी वर्ल्ड पीजीटीआई और एस्सार फाउंडेशन ने शशि रुइया मेमोरियल गोल्फ चैंपियनशिप की घोषणा की

मुंबई। भारत में पुरुषों के पेशेवर गोल्फ टूर्नामेंटों को आधिकारिक मान्यता प्रदान करने वाली संस्था डीपी वर्ल्ड प्रोफेशनल गोल्फ टूर ऑफ इंडिया (डीपी वर्ल्ड पीजीटीआई) और एस्सार समूह की कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) शाखा एस्सार फाउंडेशन ने आज शशि रुइया मेमोरियल गोल्फ चैंपियनशिप के शुभारंभ की घोषणा की। यह भारत के पेशेवर गोल्फ कैलेंडर में शामिल होने वाला एक नया वार्षिक टूर्नामेंट होगा। यह चैंपियनशिप स्वर्गीय शशि रुइया की विरासत को समर्पित है, जिन्होंने रिव रुइया के साथ एस्सार समूह की स्थापना की थी। एक प्रतिष्ठित उद्योगपति और उद्यमी के रूप में शशि रुइया ने एस्सार को बुनियादी ढाँचे पर केंद्रित उद्यम से ऊर्जा, बुनियादी ढाँचा, धातु एवं खनन, प्रौद्योगिकी और खुदरा क्षेत्रों में सक्रिय वैश्विक निवेश समूह बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी विरासत उद्यमिता, संस्थान निर्माण, औद्योगिक विकास और परंपरागत रूढ़ि प्रतिक्रिया को दर्शाती है। डीपी वर्ल्ड पीजीटीआई और एस्सार फाउंडेशन के बीच पाँच वर्षीय साझेदारी के तहत शशि रुइया मेमोरियल गोल्फ चैंपियनशिप वर्ष 2031 तक प्रतिवर्ष आयोजित की जाएगी। पहला संस्करण 12-15 जनवरी, 2027 को मुंबई के विलिंगडन स्पोर्ट्स क्लब में होगा, जिसमें देशभर के अग्रणी पेशेवर गोल्फर भाग लेंगे। टूर्नामेंट की कुल पुरस्कार राशि ₹0.2 करोड़ होगी। प्रो-एम आयोजन 10 जनवरी, 2027 को होगा। डीपी वर्ल्ड प्रोफेशनल गोल्फ टूर ऑफ इंडिया (डीपी वर्ल्ड पीजीटीआई) के अध्यक्ष श्री कपिल देव ने कहा: श्री शशि रुइया मेमोरियल गोल्फ चैंपियनशिप को शुभारंभ भारतीय पेशेवर गोल्फ के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। डीपी वर्ल्ड पीजीटीआई को एस्सार समूह के साथ मिलकर ऐसी चैंपियनशिप स्थापित करने पर गर्व है, जो उसके सह-संस्थापकों श्री रवि रुइया और स्वर्गीय शशि रुइया की दूरदृष्टि तथा व्यापार और उद्योग में उनके स्थायी योगदान को सम्मान देती है।

एयरटेल ने प्रीपेड ग्राहकों को प्रीमियम एंटरटेनमेंट उपलब्ध कराने के लिए यूट्यूब के साथ की साझेदारी

मुंबई। आज के समय में, ग्राहकों के लिए मोबाइल डेटा अब सिर्फ कनेक्टेड रहने का माध्यम नहीं रह गया है। यह अब उनके लिए शो और फिल्में देखने, अपने पसंदीदा क्रिएटर्स को फॉलो करने, म्यूजिक सुनने और नए कंटेंट की खोज करने का जरिया बन गया है। ग्राहकों की इस व्यापक उपयोग संबंधी जरूरत को पूरा करने और अपनी सेवाओं के साथ इसे और बेहतर बनाने के लिए, एयरटेल ने अपने प्रीपेड ग्राहकों को 'यूट्यूब प्रीमियम' उपलब्ध कराने के लिए यूट्यूब के साथ साझेदारी की है। इस साझेदारी के जरिए ग्राहकों को बिना विज्ञापनों वाला यूट्यूब अनुभव मिलेगा, जिसमें शॉर्ट्स के साथ-साथ बैकग्राउंड प्ले, ऑफलाइन डाउनलोड और यूट्यूब म्यूजिक प्रीमियम का लाभ भी मिलेगा। नियम एवं शर्तें लागू। यह लॉन्च दशता है कि आज ग्राहक अपने फोन का इस्तेमाल किस तरह करते हैं। डेटा के जरिए वे अपने पसंदीदा क्रिएटर्स को फॉलो करते हैं, शो देखते हैं, म्यूजिक सुनते हैं और नए कंटेंट की खोज करते हैं। यूट्यूब प्रीमियम अब एयरटेल की एंटरटेनमेंट सेवाओं की सूची में शामिल हो गया है, जिसमें प्राइम वीडियो, जियोहॉटस्टार, जी5 प्रीमियम, सोनीलिव और 18 से अधिक अन्य ओटीटी प्लेटफॉर्म भी शामिल हैं। ये सभी सेवाएं एयरटेल के ₹. 200 वाले ओटीटी टॉप-अप के साथ उपलब्ध हैं, जिसमें 30GB अतिरिक्त डेटा भी मिलता है। यूट्यूब प्रीमियम को शामिल करके, एयरटेल अपने प्रीपेड एंटरटेनमेंट ऑफर का विस्तार कर रहा है ताकि ग्राहक कंटेंट देखने के अलग-अलग तरीकों का लाभ उठा सकें, चाहे वह शो और फिल्में स्ट्रीम करना हो, क्रिएटर्स को देखना हो, म्यूजिक सुनना हो या नया कंटेंट खोजना हो। डेटा, प्रीमियम एंटरटेनमेंट और कई डिजिटल अनुभवों को एक फिकसती पैक में उपलब्ध कराकर, एयरटेल कनेक्टिविटी से आगे बढ़कर ग्राहकों के लिए ऐसे खास ऑफर पेश करना जारी रखे हुए है, जो उनकी रोजमर्रा की जरूरतों के लिए अधिक उपयोगी साबित हों।

मुकुंदीपुर गांव में भव्य संगीतमय श्रीमद्भागवत कथा का आयोजन



जौनपुर। जनपद जौनपुर के सिकरारा क्षेत्र अंतर्गत मुकुंदीपुर गांव में भव्य संगीतमय श्रीमद्भागवत कथा का आयोजन किया जा रहा है। कथा के आयोजन से क्षेत्र का माहौल भक्तिमय बना हुआ है और श्रद्धालुओं में विशेष उत्साह देखने को मिल रहा है। इस धार्मिक आयोजन में श्रीधाम वृंदावन से पधारी कथा वाचिका पूज्या श्रीजीता पंडित जी अपने मुखावरिंद से श्रद्धालुओं को श्रीमद्भागवत कथा का रसपान करा रही हैं। पत्रकार आदेश मिश्र ने बताया कि कथा का आयोजन 22 अक्टूबर से 28 अक्टूबर तक किया जा रहा है। प्रतिदिन दोपहर 2 बजे से कथा प्रारंभ होती है। कथा के संयोजक दिलीप शर्मा (बबलू) एवं समस्त ग्रामवासियों ने क्षेत्र के सभी श्रद्धालु भक्तों से अपील की है कि वे अधिक से अधिक संख्या में पहुंचकर श्रीमद्भागवत कथा का श्रवण करें तथा धर्म, भक्ति और आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करते हुए पुण्य के भागी बनें। इस आयोजन का उद्देश्य लोगों में धार्मिक आस्था, भक्ति भावना और आध्यात्मिक चेतना का प्रसार करना है।

बांगर खुर्द में नव बजरंग दुर्गा पूजा समिति का भंडारा संपन्न



सुलतानपुर। जनपद सुलतानपुर के करौंदीकला क्षेत्र अंतर्गत बांगर खुर्द गांव में नव बजरंग दुर्गा पूजा समिति के तत्वावधान में 10 दिवसीय भव्य दुर्गा पूजा का आयोजन किया गया। इस धार्मिक आयोजन का संचालन समिति के अध्यक्ष रंजीत आर पांडेय एवं दलजीत आर. पांडेय के निवास पर किया गया। दुर्गा पूजा के दौरान समस्त ग्रामवासी भक्तिभाव के साथ दिन-रात मां दुर्गा की पूजा-अर्चना में जुटे रहे। पूजा के समापन अवसर पर महाप्रसाद एवं भंडारे का आयोजन किया गया, जिसमें हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने पहुंचकर महाप्रसाद ग्रहण किया और माता रानी का आशीर्वाद प्राप्त किया। आयोजन को सफल बनाने में समिति अध्यक्ष रंजीत राजाराम पांडेय, रामनारायण चौबे, सुनील चौबे, राम उजागर, समरजीत पांडेय, सतीश चौबे, आदित्य चौबे, मजनु, अशोक पांडेय, अंकित चौबे, दीपक चौबे, सुनील गुप्ता, पंकज चौबे, रामकृष्ण पांडेय सहित समस्त ग्रामवासियों ने सक्रिय भूमिका निभाई। इस धार्मिक आयोजन से पूरे गांव में भक्तिमय माहौल बना रहा। श्रद्धालुओं ने मां दुर्गा की आराधना कर सुख-समृद्धि एवं खुशहाली की कामना की।

दाजी की लंदन यात्रा में हजारों लोग जुड़े

लंदन। हार्टफुलनेस के मार्गदर्शक एवं राम चंद्र मिशन के अध्यक्ष पूज्य दाजी (कमलेश डी. पटेल) की 15 से 20 अक्टूबर की लंदन यात्रा के दौरान हजारों लोगों ने उनसे संवाद किया। इस यात्रा में आम जनता, सांसद, शिक्षाविद, व्यापारिक नेता, धार्मिक समुदाय और नागरिक समाज के प्रतिनिधि एक साथ आए। 2024 के बाद दाजी की यह पहली यूके यात्रा थी, जिसने दक्षिण-पूर्व लंदन के बेक्सलेहीथ में हार्टफुलनेस यूके की एक नई 44 एकड़ की स्थायित्व एवं सामुदायिक पहल की शुरुआत को भी चिह्नित किया। इस पहल की परिकल्पना एक दीर्घकालिक सामुदायिक संपत्ति के रूप में की गई है, जो हरित स्थानों, पारिस्थितिक पुनर्स्थापन और जैव विविधता, कल्याण, शिक्षा, स्वयंसेवा और सामुदायिक सहभागिता को एक साथ लाती है। यह पहल कानूना शांति वनम से प्रेरित है, जो हैदराबाद (भारत) के पास हार्टफुलनेस का 1,400 एकड़ में फैला वैश्विक मुख्यालय है। वहाँ की बंजर भूमि को एक पुनर्जोड़ी वातावरण में बदल दिया गया है, जिसमें पारिस्थितिक पुनर्स्थापन, जल संरक्षण, शिक्षा और सामुदायिक जीवन का एकीकरण शामिल है।

ग्लेनफिडिच और राजेश प्रताप सिंह ने त्योहारों पर लगजरी गिफ्टिंग के अंदाज को बनाया खास

मुंबई। स्कॉटलैंड की मशहूर सिंगल माल्ट स्कॉच विस्की ब्रांड ग्लेनफिडिच ने भारत के जाने-माने डिजाइनर राजेश प्रताप सिंह के साथ मिलकर त्योहारों के लिए खास गिफ्टिंग कलेक्शन पेश किया है। इस खास कलेक्शन में ग्लेनफिडिच की 12, 15 और 18 साल पुरानी विस्की शामिल हैं। दोनों की सोच में कारीगरी, बारीकी और कुछ नया करने की चाह एक जैसी है। इसी को ध्यान में रखते हुए, इस कलेक्शन में ऐसे खास एक्सेसरीज तैयार किए गए हैं, जो विस्की की बोतल के साथ गिफ्ट देने के अनुभव को और भी खास बनाते हैं। ग्लेनफिडिच ने हमेशा अपनी परंपरा को बनाए रखते हुए कुछ नया करने की कोशिश की है। कई पीढ़ियों से यह ब्रांड सिंगल माल्ट विस्की बनाने के तरीके को बेहतर बनाने में जुटा है। यही सोच डिजाइनर राजेश प्रताप सिंह के साथ इस साझेदारी की वजह बनी। राजेश के डिजाइन में भी परंपरा, बारीकी और नएपन का मेल देखने को मिलता है। इस साझेदारी के जरिए दोनों ने अपनी-अपनी खासियत को एक साथ लाने की कोशिश की है। दोनों का मकसद बेहतरीन कारीगरी और छोटी-छोटी बारीकियों पर ध्यान देकर कुछ खास तैयार करना है। इस कलेक्शन में त्योहारों पर गिफ्ट देने के पुराने तरीके से हटकर कुछ नया करने



की कोशिश की गई है। इसमें खास डिजाइन और स्टायल का ध्यान रखा गया है। ग्लेनफिडिच 12 साल पुरानी विस्की के गिफ्ट पैक में खास डिजाइन वाला पॉकेट स्क्वायर दिया गया है। इसके 10 अलग-अलग डिजाइन बोतल के गले पर लगे टैग के जरिए दिखाए गए हैं। वहीं, ग्लेनफिडिच 15 साल पुरानी विस्की के गिफ्ट पैक में पॉकेट स्क्वायर के साथ 'स्टैग' यानि हिरण के आकार का बात अच्छी लगी कि वह अपनी ब्रॉच दिया गया है। साथ ही 18 साल पुरानी विस्की के गिफ्ट पैक में खास डिजाइन वाले बटन का सेट शामिल है। इन सभी एक्सेसरीज में ग्लेनफिडिच की खास कारीगरी के साथ स्टायल का भी पूरा ध्यान रखा गया है। इतना ही नहीं पैकेजिंग में ब्रांड के 'स्टैग' मशहूर हिरण के निशान और डिस्टिलरी की तस्वीरों के साथ सुनहरे रंग के फेब्रिक् डिजाइन भी शामिल किए गए हैं। विलियम ग्रांट एंड सन्स इंडिया के मैनेजिंग डायरेक्टर कार्तिक महिंद्रा ने

बताया कि, ग्लेनफिडिच में हम हमेशा से अच्छी कारीगरी और कुछ नया करने पर ध्यान देते आए हैं। डिजाइनर राजेश प्रताप सिंह के साथ हमारी साझेदारी इसी सोच का नतीजा है। इसके जरिए हमने लगजरी गिफ्टिंग को एक नया अंदाज देने की कोशिश की है। हम चाहते हैं कि गिफ्ट देने का तरीका कुछ अलग और खास हो। इस कलेक्शन के जरिए हम विस्की के साथ ऐसा कुछ देना चाहते हैं, जो इसे और खास बनाए और लंबे समय तक याद रहे हमारा मानना है कि किसी गिफ्ट की अहमियत सिर्फ उसकी कीमत से नहीं, बल्कि उसे देने के पीछे की सोच और भावनाओं से होती है। राजेश प्रताप सिंह ने बताया कि, मुझे ग्लेनफिडिच की यह बात अच्छी लगी कि वह अपनी पुरानी परंपरा को बनाए रखते हुए हमेशा कुछ नया करने की कोशिश करते हैं। मेरी डिजाइनिंग की सोच भी कुछ ऐसी ही है। इस कलेक्शन को बनाते समय हमने हर छोटी-बड़ी चीज का ध्यान रखा है। सामान की क्वालिटी से लेकर उसकी बनावट और डिजाइन तक पर खास ध्यान दिया गया है। इस तरह हमने अपनी-अपनी सोच को मिलाकर कुछ खास तैयार किया है, जो त्योहारों के बाद भी लोगों को इस साझेदारी की याद दिलाएगा।

इस फेस्टिव सीजन फोनपे पर बेहद कम कीमत में लें फायरक्रैकर इंश्योरेंस और अपने परिवार को सुरक्षित रखें

मुंबई। फोनपे ने अपने संपूर्ण फायरक्रैकर इंश्योरेंस की वापसी का ऐलान किया है, जो इस प्लेटफॉर्म पर लगातार तीसरे साल भी उपलब्ध है। यह दिवाली के दौरान पटाखों से होने वाले हादसों से पूरी सुरक्षा देने के लिए ₹. 11 से शुरू होने वाले फिक्स्ड, पॉकेट-फ्रेंडली प्रीमियम पर ₹. 25,000 तक का व्यापक मेडिकल कवरेज देता है। Pho»»fePe प्लेटफॉर्म पर डिजिटली उपलब्ध और आदित्य बिड़ला हेल्थ इंश्योरेंस द्वारा अंडरराइट किया गया, यह सीजनल माइक्रो-इंश्योरेंस का मकसद खरीदारों को बेहतर भरोसा और सुरक्षा देना है, ताकि वे त्योहारों का

मजा ले सकें और यह जान सकें कि किसी अनहोनी की स्थिति में उनके पास फाइनंशियल मदद है। अस्पताल में भर्ती होने और डे-केयर का कवरेज मुख्य पॉलिसीधारक, जीवनसाथी और दो आश्रित बच्चों तक को सुरक्षा प्रदान करता है, जबकि दुर्घटना में मृत्यु होने पर मिलने वाला लाभ केवल मुख्य पॉलिसीधारक तक ही सीमित है। अलग-अलग त्योहारों के शेड्यूल को ध्यान में रखते हुए, कवरेज दो तरह से दिया जाता है। खरीदारी के दौरान साफ-साफ जानकारी के लिए, किसी भी समय प्लेटफॉर्म पर सिर्फ एक एक्टिव प्लान दिखाया जाता है। जिसमें 30-

दिन का प्लान: ₹. 21 की कीमत वाला यह विकल्प 15 अक्टूबर से शुरू होगा और 14 नवंबर तक एक्टिव पॉलिसी कवरेज देगा। यह खरीदने की तारीख से 30 दिनों तक मान्य रहेगा। 11-दिन का प्लान: ₹.11 की कीमत वाला यह विकल्प दिवाली के करीब, 5 नवंबर को उपलब्ध होगा और 15 नवंबर तक कवरेज देगा। यह खरीदने की तारीख से 11 दिनों तक मान्य रहेगा। इस प्लान को सरल, पारदर्शी और आसानी से उपलब्ध होने के लिए डिजाइन किया गया है। यूजर सीधे फोनपे ऐप पर एक मिन्ट से भी कम समय में पॉलिसी खरीद सकते हैं और तुरंत कवरेज पा सकते हैं।

प्राजापति समाज मुंबई

वर-वधू परिचय सम्मेलन

समाज के विवाह योग्य युवक-युवतियों एवं उनके अभिभावकों के लिए यह एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है।

दिनांक: 25 अक्टूबर 2026

समय: दोपहर 2:00 बजे से

स्थान: Sewaram Lalwani BMC School Building S. L. Road, Vijay Garden के सामने, Mannis Cafe के पास, Mulund West - 400080

चेतावनी / महत्वपूर्ण सूचना

अगर आप वर वधु को नहीं ले कर आ रहे है तो आपको ENTRY नहीं है।

विशेष अनुरोध:

सभी अभिभावकों से विनम्र निवेदन है कि विवाह योग्य बेटे-बेटियों को अपने साथ लेकर कार्यक्रम में अवश्य आएँ।

यह कार्यक्रम केवल अभिभावकों की बैठक नहीं है, बल्कि वर-वधू के आपसी परिचय और उचित रिश्ते की संभावना तलाशने के उद्देश्य से आयोजित किया जा रहा है।

कृपया इसे सामान्य मीटिंग न समझें।

अपने बेटे या बेटी को साथ लाएं, ताकि वे स्वयं एक-दूसरे से परिचित हो सकें और परिवारों को भी उचित निगय लेने में सुविधा हो।

आपकी उपस्थिति और सहयोग से ही इस कार्यक्रम का उद्देश्य सफल होगा।

संपर्क सूत्र:

- रामचंद्र प्रजापति - 98204 70424
- अमरनाथ प्रजापति - 93722 17012
- चंद्रशेखर प्रजापति - 98333 48071

अतिरिक्त संपर्क / पंजीकरण हेतु:

- श्री. रामजनन प्रजापति - 98691 11979
- शरद प्रजापति - 98200 84818
- रामजनन प्रजापति (A/C) - 88210 98139
- सतीश प्रजापति - 93241 88094

कृपया जल्द से जल्द अपना राशि निर्दिष्ट करवा लें, ताकि कार्यक्रम की व्यवस्था करना हमारे लिए सरल हो।

आयोजक: **प्राजापति समाज मुंबई**

एक अच्छा रिश्ता | एक मजबूत समाज | उज्ज्वल भविष्य